CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2.2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

वर्ष-५ जून, १९९४ अंक-६

परामर्श-मण्डल

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
पं० गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिकविहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० विश्वरंजन : डॉ० शम्भुशरण : नगेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी चौधरी : भगवती प्रसाद द्विवेदी : पशुपति नाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'

दूरभाष : ०६१२-२६११३४ इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह अंक के प्रायोजक

अम्बुजा सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम

मुख्य संरक्षक

सत्यनारायण सिंह

संरक्षक मंडल

पाण्डेय कपिल : नगेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' . करुणानिधान केशव : शैल वर्मा : डॉ० बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : जगन्नाथ : रंगश्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : डा० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० वसन्त कुमार : जनार्दन प्रसाद : आनन्द सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ० शम्भुशरण : पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार भट्टाचार्य : शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : पो० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार : रूपश्री : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण दीक्षित : अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुशीला पाण्डेय : कर्मा प्रेस प्रा० लि० पटना : शांति कुमारी : राम अयोध्या तिवारी : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय : चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र : डॉ० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक 'पराग' शालिग्राम माधव : मोती बी. ए : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव ।

☐ दाम —एक अंक के तीन रुपया पचास पइसा ☐

दाम— साल-भर के - पैंतीस रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियायती दाम— पचीस रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में विज्ञापन के दर

	एक अंक में	तीन अंक में
आवरण पृष्ठ (बाहरी)	१००० रु०	२५०० रु०
आवरण पृष्ठ (भीतरी)	७५० रु०	२००० रु०
पूरा पृष्ठ (साधारण)	५०० रु०	१००० रु०
आधा पृष्ठ (साधारण)	३०० रु०	७५० रु०
भोजपुरी के एक किताब के विज्ञापन कम से कम १ इंच × ४ इंच जगह में	५० रु० अग्रिम भुगतान	१०० रु० अग्रिम भुगतान

विज्ञापन भेजे के पता :—

व्यवस्थापक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, इन्द्रपुरी, पटना-२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरभाष : २६११३४

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]

इन्द्रपुरी, पटना–८०० ०२४

वर्ष : ५ जून, १९९४ अंक : ६

कथनी सम्पादक के

भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के स्थिति

भोजपुरी पत्र-पत्रिकन का दिसाईं पिछला पाँच साल बहुत महत्व के रहल बा। एह अवधि में-कुछेक अइसन पत्र-पत्रिका निकलत रहल बाड़ी स, जवनन का माध्यम से भोजपुरी के समसामयिक आ प्रतिनिधि लेखन उजागर होखे के अवसर भइल ह, जवना से ओह बदलाव के रेखांकित कइल जा सकत बा, जवन कि भोजपुरी के साहित्यिक लेखन में आ रहल बा। भोजपुरी के रचनाशीलता में आधुनिक भाव-बोध आ नया शिल्प-शैली के जे विकास भइल बा, आ ओकरा साथे-साथ परम्परागत लेखन के भी जे युगानुकूल नवीकरण भइल बा, ओह सबके झलक पिछला पाँच साल में प्रकाशित पत्र-पत्रिकन में देखल जा सकत बा।

एगो जमाना रहे जब आरा से, आ बाद में पटना से लम्बा समय तक निकलत रहेवाला मासिक 'भोजपुरी' भोजपुरी के साहित्यिक जगत् के आँख के तारा रहे। ऊ जबले बन्द भइल तबले त्रैमासिक 'अँजोर' के अँजोर भोजपुरी के साहित्यिक जगत में फइल चुकल रहे। भोजपुरी नवलेखन के उजागर करेवाला त्रैमासिक 'उरेह' निकलल, 'भोजपुरी साहित्य' निकलल, 'पाती' निकलल, 'भोजपुरी माटी', 'माटी के महक' आ 'भोजपुरी जनपद' निकलल, अनियतकालिक/त्रैमासिक 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' आ मासिक/त्रैमासिक 'भोजपुरी अकादमी पत्रिका', निकलल, 'भोजपुरी कहानियाँ' आ 'भोजपुरी कथा-कहानी' निकलल; आ एकरा अलावे नियत/अनियतकालिक अनेक महत्व-पूर्ण पत्र-पत्रिका समय-समय पर निकलत रहल, जवना से भोजपुरी में साहित्यिक गहमागहमी के माहौल एगो लम्बा समय ले बनल रहल।

बाकिर, वीस साल चल के १९७९ में 'अँजोर' आ पाँच साल चलके १९८० में 'उरेह' बन्द हो गइल। 'भोजपुरी साहित्य', 'पाती', 'माटी के महक', 'भोजपुरी जनपद', 'भोजपुरी कहानियाँ', 'भोजपुरी कथा-कहानी' आ अनेक पत्र-पत्रिका १९८० का आसपास बन्द होखे लागल। कुछेक महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिका के कुछेक छिटपुट अंक कुछ आगहूँ निकलल, बाकिर अवधि पर ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकलला से आ निरन्तरता ना रहला से ओकर कुछ खास असर साहित्यिक माहौल पर ना पड़ सकल। एगो 'भोजपुरी माटी', जे लगभग तीन बरिस ले त्रैमासिक रहे, १९८० से मासिक रूप में निकलल आ निकलत रहल, बाकिर ओह पत्रिका में साहित्यिक सामग्री के संयोजन पर विशेष ध्यान ना रहल। एह से, अस्सी के दशक भोजपुरी के साहित्यिक पत्रकारिता खातिर गतिरोध के समय मानल जाई। एह दस साल के लम्बा अवधि में पत्र-पत्रिकन के साहित्यिक हलचल के लगभग अभाव रहल बा आ एकर दुष्प्रभाव साहित्यिक आ रचनात्मक माहौल पर भी पड़ल बा। अइसन बात नइखे कि एह अवधि में एह गतिरोध के तूड़े के प्रयास नइखे भइल। 'भोजपुरी माटी' त निकलते रहे; आज ले निकलिए रहल बा। अस्सी के दशक के शुरुए में मोतिहारी से 'जोखिम' निकलल, दशक का मध्य में आरा से 'कलेवा' निकलल, आ एह दशक के आखिरी तीन साल का दौरान साहेबगंज (मुजफ्फरपुर, से 'कोइल' निकलल। आ एह पत्रिकन में साहित्यिक अन्तर्दृष्टि के अभाव ना रहे। बाकिर आर्थिक गतिरोध का चलते, एह पत्रिकन के प्रकाशन नियमित आ लम्बा समय तक ना हो सकल, आ इहो पत्र-पत्रिका बंद हो गइली स। एह से सूझबूझ वाला प्रयास के बावजूद एह पत्र-पत्रिकन से ऊ माहौल ना बन सकल जवन 'अँजोर' आ 'उरेह' का जमाना में रहे।

बाकिर १९९० से एह परिस्थिति में बदलाव आइल बा, आ अबतक, एह पाँच बरिस का अवधि में, पत्र-पत्रिकन का माध्यम से, भोजपुरी के साहित्यिक जगत में सक्रियता के सुधी माहौल बन गइल बा। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के मासिक प्रकाशन जनवरी १९९० से शुरू भइल जे नियमित रूप से आ सजग दृष्टि से भोजपुरी के समसामयिक उत्कृष्ट आ प्रतिनिधि लेखन के उजागर करे में आ प्रतिभावान नया लेखकन के प्रोत्साहित करे में लागल बा।

१९९० के शुरुए में त्रैमासिक 'बिगुल' के प्रकाशन सुधी आ सुरुचिपूर्ण ढंग-ढर्रा से अनवरत होत रहल बा, जवना के 'कवितांक' आ 'लघुकथांक' ओकरा सजग सक्रियता के प्रमाण बा। १९९१ से बक्सर से 'जगरम' के प्रकाशन शुरुए से साहित्यिक जगत के ध्यान खींचत रहल बा। ओकर हाले में प्रकाशित लोक-साहित्य-अंक ओकर सुधी सोच आ ठोस साहित्यिक सेवा के परिचायक बा। १९९२ के उत्तरार्ध में बकसर से प्रकाशित 'लहार' के अबले चार अंक निकल चुकल बा। अपना नावें के अनुरूप एह पत्रिका के सामग्री आ रंगरूप एही चार अंक में एह पत्रिका के एगो अलग व्यक्तित्व बनवले बा। 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका' अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन का ओर से त्रैमासिक रूप में निकल रहल बा, जे अपना ढंग आ सोच का मोताबिक भोजपुरी का सेवा में लागल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९९२ से 'पाती' के पुनः प्रकाशन एगो नया उन्मेष से शुरू भइल बा। एकर कईएक विशेषांक एह दौरान निकल चुकल। एकर सुधी साहित्यिक अन्तर्दृष्टि एकरा हर अंक में देखे के मिलेला। एकर 'समकालीन कविता अंक' छोट-पातर काया में भी समकालीन भोजपुरी कविता के सही स्वरूप उजागर करे में समर्थ भइल बा। पिछला कुछ महीना से 'भोजपुरी माटी' के प्रकाशन में नियमितता ले आवे के प्रयास आ ओकरा सज-धज आ छपाई में बेहतरी देख के बहुत आशा बँधत बा कि पिछला सोरह-सत्रह बरिस से प्रकाशित एह पत्रिका के सेवा भोजपुरी का आगहूँ मिलत रही। एकरा सामग्री पर ध्यान रहे त ई पत्रिका भोजपुरी के साहित्यिक माहौल ऊँच उठावे में बड़ा उपयोगी साबित होई।

लखनऊ से हिन्दी में निकले वाली पत्रिका 'भोजपुरी लोक' जवना नियमितता से आ जवना रंग-रूप में निकल रहल बा, अगर ऊ भोजपुरी में निकलित त भोजपुरी के बड़ उपकार होखित। हिन्दी में निकल के भी ऊ अगर भोजपुरी-भाषा-साहित्य-संस्कृति-समृद्धि-इतिहास-भूगोल तकले अपना के सीमित राखित त ऊहो एगो बात होखित। भोजपुरीतर विषयन के समा-योजन 'भोजपुरी लोक' नामधारी पत्रिका में देख के लागेला, जइसे दाँत तरे अँकड़ी पड़ गइल होखे। अब त ई पत्रिका अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद् उत्तर प्रदेश के मुख पत्र हो गइल बा, त कम-से-कम अब ओकरा अपना नाम आ सीमा के ध्यान में राखे के चाहीं। हाले में एगो छोट-पातर पत्रिका 'भोजपुरी लहर' देखे के मिलल ह, जे बक्सर से प्रकाशित बा। अइसने छिट-फुट प्रयास कहीं-कहीं से होखत रहत बा। अइसन प्रयास भोजपुरी के साहित्यिक ललक आ अँगड़ाई के परिचायक बा आ ई भोजपुरी खातिर बड़ा शुभ लक्षण बा।

भोजपुरी-जगत के ई सूचना देत हमारा हार्दिक प्रसन्नता हो रहल बा कि 'भोजपुरी कथा कहानी' के पुनः प्रकाशन, एही साल, जुलाई का महीना से त्रैमासिक रूप में, कुछ विशेष योजना के तहत होखे जा रहल बा। एकर हर अंक कवनो एगो कथाकार पर केन्द्रित होई।

भोजपुरी के एह सब पत्र पत्रिकन का अलावे, हिन्दी के अइसन अनेक पत्र-पत्रिका बा, जवना में वरिसन से भोजपुरी के जगह मिले लागल बा। राँची के 'प्रभात खबर' आ 'राँची एक्सप्रेस', बम्बई के 'जनसत्ता' आ दिल्ली के 'नव भारत टाइम्स' में भोजपुरी के फीचर आ रचना नियमित रूप से, आ पटना के 'हिन्दुस्तान' में कबो-कबो प्रकाशित होला। एकरा अलावहूँ अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकन में भोजपुरी के कुछ-ना-कुछ रचना छापे के एगो लहर बनल बा। भोजपुरी खातिर ई बड़ा शुभ लक्षण बा।

—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम तहरा के याद करीले

—डॉ० रिपुसुदन प्रसाद श्रीवास्तव

हम तहरा के याद करीले
बहुत बहुत हम याद करीले !
जब कवनो टूअर-टापर लरिका
अपना पँजरा में भूख पियास दबवले लउके;
जब कवनो घोघड़, झवराइल अउर अघाइल कुक्कुर
कवनो महल अटारी से बान्हल ओकरा पर छउके;
हम तहरा के याद करीले
हे ममता के मूरत !
बहुत बहुत हम याद करीले !
जब बैसाख जेठ के तलफत भुंभुए में
खाली गोड़े कवनो बनिहारिन खेत खेत मारल घूमेले
जब पियास का मारे जीभ निकलले कवनो हरवाहा
सूखल बबूर के गाछ तले छँहरी खोजेले;
हम तोहरा के याद करीले,
हे अँचरा के छाया से सब ताप हरेवाली !
तहरा के याद करीले !
जब पुरान लुग्गा जइसन धरती के छाती
जगह जगह से दरकेला,
जब अनाज पानी खातिर दर दर भटकत
हर गाँव शहर में सरकेला
हे अँखियन में पानी के गगरी वाली !
हम तहरा के याद करीले,
बहुत बहुत हम याद करीले !
जब कवनो बउराइल मनई जीयत जागत
दोसरा मनई के मारेला,
खून खून के रंग एक होला
चाहे काबुल में होखे चाहे दूरदराज अजरबैजान,
आ चाहे नियरे बारा में होखेला,
हे करेज में संजीवनी समेटे वाली !
हम तहरा के याद करीले
बहुत बहुत हम याद करीले !

□ आर-११, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—जगन्नाथ

पीर मन के सँवारत उमर हो गइल
अब त सपना सँचे के हुनर हो गइल

जे भइल हमरा आँतर के भीतर भइल
कइसे तोहरा ए यारे खबर हो गइल

नेह के एगो झिटकी रहे बस गिरल
मन के कोना में लहरे लहर हो गइल

अब ई देखीं ना उनका भइल जब नजर
बा जमाना के चउकस नजर हो गइल

गाँव बा—एगो असरा रहल ह मगर
अब त सुनली हँ ऊहो शहर हो गइल

बात मन के खुलासा निकल ना सकल
बा कहे में गजल कुछ कसर हो गइल

☐ ए/२१, साधनापुरी, पटना-१

गीत

—अश्विनी कुमार आँसू

नेहिया के रसरिया मत तूरीं, सपना के महलिया ढह जाई !
जिन्दगी के मोटरिया ढोए ला तब जियरा में का रह जाई !!
हर जनम में इहवें ले आके रउआ से साथ बिछड़ जाला
जे हूक करेजा में बन के हमरा मारेला गड़ जाला
अबरी आखिर ले निबहल त चउरासी ठोकर बह जाई !!
सुख-दुख के लेखा हम का दीं, अपने खाता में अंटकोरीं
माकत-माकत तन थाकल बा, टकसब ना केतनो झकझोरीं
एही से दर ना छोड़ीं जे कबहीं त बात निबह जाई !!
ना भगति मिलल ना ज्ञान भइल, आ केतना साँझ-बिहान भइल
मनवाँ में टीस भरल जाला, का ईहो जन्म जियान भइल
लागल रहला से लागेला कि सबहूँ अपरी लह जाई !!

☐ जिला परिषद् कार्यालय, मोतिहारी (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैराग्य सूक्ति

—पाण्डेय आशुतोष

१— भेको धावति तं च धावति फणी, सर्पं शिखी धावति।
व्याघ्रो धावति केकिनं विधिवशाद् व्याधोऽपितं धावति !!
स्वस्वाहार विहार साधन विधौ सर्वे जना व्याकुलाः,
कालस्तिष्ठति पृष्ठतः कचधरः केनापि नो दृश्यते !!

बेंगा पाछे साँप, सँपवा के पाछे मोर धावे
मोरवा के पाछे बाघ, बाघ पँ शिकारी बा !
बेयाकुल सभे बा आहार औ बिहार में, ना—
देखे केहू काल केस धइले पिछारी बा !!

२— मातर्मायि भगिनि कुमते हे पितर्मोहजाल,
व्यावर्तध्वं भवतु भवतामेषर्धो वियोगः !
सद्यो लक्ष्मी रमण चरण भ्रष्टगा प्रवह—
व्यामिश्रायां दृषदि परमब्रह्म दृष्टिर्भवामि !!

माई माया ! बाबू मोह ! दीदी रे कुमति सुनु !
हमरा के छाँड़ि सभे घरे चलि जाईं !!
हरि चरनन से झरें जे गंग उनहीं के
पथल पँ बईठ भजन हम गाईं।

३— अजातपक्षा इव मातरं खगा
स्तन्यं यथा वत्सतराः क्षुधार्ताः
प्रियं प्रियेव व्युषितं विषण्णा
मनोऽरविन्दाक्ष दिदृक्षते त्वाम !!

खोतवा के बचवा जोहेला महतारी जइसे
बछरू भुखाइल जइसे अगोरे मतारी के !
राह ताके बिरहिन ज्यों परदेसिया के—
कमलनयन ! वइसे दसा ई भिखारी के !!

☐ पो० मलकौली-८४५१०५, प० चम्पारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवाँ हमनी सभे बराबर बानी

—तंग इनायतपुरी

हई बड़का, हऊ बड़का,
रउरा बड़का, हम बड़का
कि के बड़का?
जब हम ई कहिले कि रउरा बड़का
त रउरा गच्च हो जाइले
बाकिर जब हम ई कहिले कि हम बड़का
त रउरा भितरे भितर पिनपिना जाइले।
जो रे बड़का! ते कहवाँ रहबे?
इहां कीहां रहबे कि हमरा कीहाँ रहबे?
तेहीं बोल कि केकरा कीहाँ रहबे?
कतहूँ रह, बाकिर अहथिर रह।
तोर हाल त नेता खानी हो गइल बा
आज हे पार्टी में त काल्ह हो पार्टी में।
गोली मारीं ई बड़का के,
ना रउरा बड़का, ना हम बड़का
ना हई बड़का, ना हऊ बड़का
आ ना केहू बड़का।
एजी! हमरा त ई बुझाता कि—
बड़ भइला भा ऊंच भइला में
हमनी के बीच फरक त हो सकेला
हमरा से ऊँच रउरा होईं भा—
रउरा से ऊँच हम होईं
बाकिर हम दावा का साथे कहतानी कि
नोचता में हमनी सभे बराबर बानी
आ चाहे हमनी के ऊँचाई पर—
कवनो वाद के बुनियाद रखल जाव
बाकिर हमरा बुझाता कि—
हमनी के एही नीचता पर
ई समाजवाद टिकल बा
जहवाँ हमनी सभे बराबर बानी!

□ कागजी मुहल्ला, सीवान-८४१२२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीत गइल बरसात

—रामदेव सिंह 'रमण'

बीत गइल बरसात, हम नहिं भींजे पइनी !
ई अचरज के बात, हम नहिं बूझे पइनी !!
सगरो भइल अँजोर, मन-मन्दिर अँधियारा !
आइल पूनम रात, शशि-मुख देख न पइनी !!
मड़वा रुचिर छवाय, चानन चउका कइनी !
दुअरा लगल बरात, दुलहा घर ना पइनी !!
चढ़ल धूल आकाश, जुगनू जोत बिखेरे !
कंचन भइल कुधात, हम जस तस रह गइनी !!
नइहर भइल बिरान, खोंइछा अँसुवन धारा !
ई कइसन सौगात, नाहिं जनम भर पइनी !!

☐ दिलावरपुर, पूर्वी चम्पारन (बिहार)

गजल

—आशनारायण प्रसाद 'अशोक'

साँच जब से दफन हो गइल
लोग अजगर के फन हो गइल
झूठ के जाल रच लेहले बा
सोझियो बदचलन हो गइल
छोटे लागे लगल रात-दिन
चान विष के किरिन हो गइल
घोर लेहले बा जिनगी जहर
सुख हिया के हवन हो गइल
जीते जी मर रहल आदमी
जिन्दगी बा कफन हो गइल
सुख बा विज्ञान देहले मगर
साँस लेहल कठिन हो गइल
चोट खाके हँसल जे 'अशोक'
हुनकर दोसर जनम हो गइल

☐ रेशम कोठी, बीरगंज, नेपाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

रिश्ता के दरद

—डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय

सवालन के अनगिनत कोड़ा तड़ा-तड़ पड़त रहे आ लोचन बाबू गरदन झुकवले चुपचाप सहत रहलन। उनका मुँह से आहो ना निकलत रहे। उनकर बड़का बेटा दीपक कुटिल हसी हँसत कहलन—"रउरा नइखीं चाहत कि हमनियो के आपन छतदार मकान होखे, आ दोसर सुख-सुविधा के सर-सामान होखे। जमाना के संगे चले खातिर का कुछ करे के पड़ेला, ई रउरा नइखे बुझात। जमाना ढेर आगे बढ़ गइल बा। माई जिनगी भर किराया के घर में दुःख काटत, एह दुनिया से चल गइली, बाकिर हमनी के जरिया रहते दुःख काहे भोगीं, काहे लोग के नजर में ओछ बनल रहीं... ।" अबहीं उनकर बात पूरो ना भइल रहे कि छोटका बेटा अमर उखड़ल आवाज में झल्ला के कहलन—"आखिर रउरा गाँव के जमीन बेंच काहे नइखीं आवत। रउरा गाँहके नइखे मिलत। आउर लोग के जमीन कइसे बिका जाता। गाँव के जमीन जोगवला से फायदे का बा—कबो दस किलो सरसो त कबो बीस किलो धान। अपना बगइचा के फल खाइल त दूर रहल, आज ले हमनी आँखियों ना देखनीं स। जमीन बेंच अइतीं त हमनी के समस्या दूर हो जाइत। हमनियों के दूगो फ्लैट बनवा के, सुख-चैन से, ठाट-बाट के जिनगी जिअतीं आ राउरो जिनगी आराम से कट जाइत। रउरा ई बात ठीक से समझत होखब कि नौकरी से घर ना बन सकेला, अगर नौकरी से घर बने के रहित त रउरे बनवा लेले रहतीं।"

उनकर बात सुनके लोचन बाबू आपन गरदन ऊपर उठवलन आ बेटन के चेहरा पर भाव भरल नजर डललन। ऊ बेटन के आँखिन में उभरल ओरहन, खीस आ विरोध के भाव सहजे पढ़ लेलन आ मुस्कात कहलन—"देख बेटा, हम तोहरा लोग के खीस आ ओरहन के ठीक से समझत बानीं बाकिर... ।" ऊ ई कहत-कहत एक-ब-एक चुप हो गइलन। उनका अपना गलती के एहसास हो गइल। एह बाकिर से उनका बेटा लोग के का लेवे-देवे के बा। ई बाकिर उनका अपना संस्कार आ भावना के अंग बा। एकरा के ना त ऊ समझाइये सकेलन आ ना ऊ लोग समझिये सकेला। एह बाकिर के मतलब आ महातम उनका बेटो लोग के तबे बुझाई जब उहो लोग गरदन झुकवले बिना उफ कइले सवालन के कोड़ा के दरद सही लोग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बाकिर कह के बीचे में बात काहे छोड़ देनीं। कवन अइसन बात बा जवन हमनियों से तोपल जाता। हमनीं के सब बात जाने के हक बा कि ना ?" ई सवाल पूछ के, उनकर बड़की पतोह उनका चेहरा के बदलत भाव पढ़े खातिर नजर टिका देली।

ई सवाल सुन के लोचन बाबू के भीतर भूकंप होखे लागल। ऊ तनि देर खातिर घबड़ा गइलन, बाकिर अपना के सम्हारत कहलन— "सुनं दुलहिन, अइसन कवनो बात नइखे जवन तोहरा लोग के ना बतावल जाये, बाकिर कवनो बात होखे तब नू बताईं। भला कवन बाप अपना बेटा-बेटी के सुख-आराम के बारे में ना सोचेला। हमहूँ ई नइखीं चाहत कि तोहरा लोग के मान में कवनो बट्टा लागे। हमरा मर गइला के बाद तोहरा लोग के कवनो झझट होखे। सब काम निपटा लेवे के सोचले बानीं।" ई कहके ऊ दुआरी पर टांगल परदा पर जवना के बेल-बूटन के उनकर मेहरारू बड़ा लगन आ साध से कढ़ले रहली, भाव भरल नजर टिका देलन।

पल भर ले चुप्पी बनल रहे आ सभे एक दोसरा के मुँह ताकत रहे।

चुप्पी तूड़त, उनकर छोटकी पतोह कहली—"हमरा नइहर से जे सोफा-सेट, डाइनिंग-टेबुल, फ्रिज आ पलग मिलल बा, ऊ सब सामान जगह ना रहला से खराब होत बा। हम केतना बेर कहनीं कि ना होखे त सब सामान नइहरे भेजवा दीं, जगह भइला पर फेर मँगवा लेब। बाकिर ई हमरा बात पर काने ना देवेलन।"

उनका बात के कवनो खास असर लोचन बाबू पर ना भइल, बाकिर उनका बड़की पतोह के गाल लाल हो गइल आ तिलमिला गइली। उनका बुझाइल कि ऊ उनका के नीचा देखावे खातिर ई कुल्ही बात कहलस ह। घाव कहाँ आ पीभ कहाँ। बात बा घर के जगह-जमीन बेचे के आ ई नइहर से मिलल सर-सामान के फिरिस्त सुनावे लगली। बड़की पतोह दीपक के ओर सवाल भरल नजर से घूरत, मुँह बिचकावत कहली—"सामान खराब भइला पर लोग ठीक करवा लेला। अबहीं त सामान रखे के जगहा बनवा दिहल गइल बा। सामान नइहर पहुँचवा देला पर इन्तजाम से रहवे करी, ई के जानत बा। बे-लगन के शहनाई मत बजाव।" ई कह के ऊ पल भर खातिर चुप हो गइली। फेरू कहली—"चलीं जी, बाबूजी के जे मन में आवे उहे करीं। हमनी के मान-मरजादा के जब कवनो मोले नइखे त का कहे सुने के बा।" ई कहत ऊ कमरा से बाहर निकल गइली आ उनका पाछा-पाछा सभे निकल गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेटा-पतोहू के चल गइला के बाद कमरा में सन्नाटा पसर गइल। सन्नाटा आ अकेलापन से घबड़ा के लोचन बाबू आँख मूँद लेलन। उनका पहिला बेर ई बुझाइल कि सन्नाटा के डर केतना दमघोंटू आ जानलेवा होला। ऊ सन्नाटा से ऊबरे खातिर एने-ओने के बात सोचे लगलन बाकिर मन कतहीं ना टिकल। ऊ बिछवना पर आँख मूँदले उठके बइठ गइलन। आँख खोललन त उनकर नजर देवाल-घड़ी पर गइल। उनका बुझाइल कि घड़ी के दूनो सूई रुक गइल बा। ऊ मन में सोचलन — घडी खराब त ना हो गइल। ई घडी उनका रिटायर भइला पर सहकर्मी लोग बिदाई के बेरा देले बा, एतना जल्दी खराब कइसे हो जाई। हमरे आँखिन के धोखा त नइखे होत। एक त बजिये गइल होई। अबहीं ऊ विचारन के जाली में अझुराइले रहलन कि पुलिस-लाइन के घंटा एक बेर बाजल। उनकर अझुरूहट कम भइल, उनको अपना घडी के सूई घसकत लागे लागल। उनका अपना आप पर हँसी आ गइल। उनकर बेचैनी कम ना भइल। ऊ बिछवना छोड के, कमरा में टहले लगलन आ रह-रह के मने-मन आपन इरादा दोहरावे लगलन — 'होत फजीरे गाँव जरूर चल जायेब। अबकी नव-छव करिये देब। सब जगह-जमीन बेंच के, दूनो बेटा के हिस्सा के रुपिया दे के हमहूँ निचिंत हो जायेब। ओह लोग के आपन-आपन जिनगी हो जाई आ हमरो छुटकारा मिल जाई।'

० ० ० ० •

गाँव में घुसते लोचन बाबू के अचरज आ खुशी सगे-संगे भइल। तीने-चार बरिस के बाद ऊ गाँवे आइल बाड़न। एतने दिन में गाँव के भूगोल बदल गइल बा। हर टोला में पाँच-दस गो छतदार मकान बन गइल बा। गाँव के पोखरा के अगल-बगल लागे वाला हफ्तावारी हाट, स्थायी बाजार हो गइल बा। गुमटी के जगह पर छतदार दोकान बन गइल बा। ई कुल्ही देख के सोचलन कि अगर रिटायर हो के एजवे रहतन त कवनो दिकदारी ना होइत। बटाईदारो लोग बेईमानी ना करित आ खेतियो सम्हरा जाइत।' ई सब सोचत ऊ अपना टोला के ओर बढ़े लगलन।

"कहाँ जाये के बा?" बीच में पड़ेवाला टोला के एगो नवजवान पुछलस।

उनका विचार के कड़ी टूट गइल आ हड़बड़ा के ओकरा के देखलन आ अपना के सम्हारत, मुसकाये के कोशिश करत कहलन—"भूपत टोला।' ई कहके आगे बढ़े लगलन आ अपना के बोधे खातिर अपना आप से बतिअवलन—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'आन टोला के लड़िका भला उनका के कइसे चिन्ही, एकर बाप चाहे दादा जरूर चिन्हत होई।' ऊ लाख चहलन, बाकिर अपना अनचिन्हार भइला के दरद उनका के सालत रहल। गते-गते आगे बढ़त ऊ अपना टोला पहुँच गइलन। एगो घर के सोझा खड़ा होके पल भर कुछ सोचे लगलन। बीचे में एगो बारह-तेरह बरिस के लड़िका उनका आगे आके पूछलस—"केकर घर खोजत बानीं?"

एह सवाल से उनका लागल जइसे ऊ लड़िका उनका गाल पर अचके एक चटकन मरले होखे। ऊ तिलमिला गइलन आ उनका चेहरा के रंग एक-ब-एक झँवरा गइल। ऊ अपना के बटोरत, जवाब देलन—'आपन घर खोजत बानी।' उनकर जवाब सुनके लड़िका अकचका गइल आ अचरज से उनका के घूरत पुछलस—"केने बा राउर घर?"

ई सवाल उनका के आउरो बेचैन क देलस। उनका मन में आइल कि ऊ बता देस कि सामने नजर आवत घर, उनकरे घर ह जवना के छत भहरा गइल बा, खिडकी, केंवाडी बरसात के पानी से जब सड़े लागल त, उखाड के बेंच दिआइल। अब घर के नाम पर कुछ देवाल खडा बा जवनन के ईटों नोनिया के घसक गइल बा।

अबहीं ऊ कुछ कहे के चाहते रहलन कि सामने के घर से एगो बूढ़ निकललन आ उनका के देखते, झुक के सलाम करत कहलन—"कब अइनीं हँ मालिक? अपने त हमनी के बिसारिये देले बानीं।"

अपना दादा के झुक के सलाम करत देख के ऊ लडिका सकपका गइल आ गते-गते आगे बढ़ के ठाढ़ हो गइल।

लोचन बाबू जवाब देलन—"आवते बानीं। का हालचाल बा देवनाथ भगत?" "सब ठीके बा मालिक।" ई कह के देवनाथ भगत लड़िका के ओर देखत कहलन—"मुँह का देखत बाड़े, मालिक खातिर खटिया निकाल।"

दादा के हुकुम पावते ऊ लडिका घर में तेजी से गइल।

अबहीं लोचन बाबू ओह लडिका के बारे में पूछहीं के चाहत रहलन कि देवनाथ भगत कहलन—"इहे बडका पोता ह मालिक, एजवे आठवां में पढ़त बा।" "वाह, खूब तेज बा तोहार पोता।" ई कहत लोचन बाबू कुछ सोचे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगलन। एही बीचे ऊ लड़िका बँसखट बिछा के नया सोलापुरी चद्दर बिछा गइल आ एगो तकियो रख गइल। तकिया के खोलो नया रहे आ ओकरा पर हाथ से बेल-बटा काढ़ल रहे आ बेल बूटन के बीचे रेशम के तागा से लिखल रहे—'वेलकम'।

'वेलकम' पर लोचन बाबू के नजर बरबस टिक गइल। उनका भीतर एगो लडाई छिड गइल। ऊ खटिया पर बइठत लमहर साँस लेत कहलन—"लागत बा, तोहार पतोह लिखल-पढ़ल बा।"

देवनाथ भगत के चेहरा चमक उठल, ऊ मुसकात कहलन—"हँ, पढ़ल-लिखल बा आ आव-भगत करे में ओकर जोडा नइखे।"

लोचन बाबू चुप रहलन आ अपना भीतर चलत लडाई के ओर-छोर खोजे में अझुराइल रहलन।

"हाथ-मुँह धो लीं, मालिक, हम जलपान ले आवत बानीं।" देवनाथ बोललन। लोचन बाबू लमहर साँस लेत कहलन—"तनि आउरो सुस्ताये द, सफर से ढ़ेर थाक गइल बानीं हो।" ई कह के ऊ दूर से नजर आवत अपना ढहल मकान पर भावभरल नजर टिका देलन।

देवनाथ चुप्पी सधले उनका चेहरा के भाव पढ़े के कोशिश करत रहलन। अबहीं कुछ कहे-पूछे के चाहते रहलन कि तीन-चार आदमी आ गइल। लोचन बाबू के बटईदार लोग सलाम कइलस। ऊ अपना के बटोरत ओह लोग से हालचाल पूछे लगलन।

उनका हालचाल पूछते ओरहन आ शिकायत के पन्ना पलटाये लागल—'फलनवाँ माल से खेत चरवा देलस आ ओरहन देला पर तकरार करे पर उतारू हो गइल, फलनवाँ बँसवारी में से करची काटके ले गइल आ फलनवाँ के बेटा झटहा चला के आम के टिकोरा झाड़ देलस।'

लोचन बाबू चुप्पी सधले सभे के बात सुनत रहलन।

उनकर एगो बटाईदार रामदुलार कहलन—"का पूछले बानीं मालिक, गाँव के त अजबे रवैया हो गइल बा। अपने सभन के ढेर-ढेर दिन पर अइला से कुछ लोग के मनो बढ़ गइल बा। बीच-बीच में बबुओ लोग आवत जात रहित त दबदबा कम ना होइत। बूढ़ऊ मालिक के जमाना में केकरो मजाल ना रहे कि बगइचा के ओर नजरो उठा के देखे…।" ई कह ऊ पल भर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
खातिर चुप हो गइलन आ फेरू बोललन—"कुछ लोग इहाँ हवा उड़ा देले बा कि अपने सब जगह-जमीन बेंचेवाला बानीं।"

लोचन बाबू उनका बात के जवाब देवे जाते रहलें कि देवनाथ अपना चश्मा के मोट शीशा से रामदुलार के घूरत कहलन "ई कवन पंचड़ा निकाल देलऽ। मालिक के का घटल बा कि इहाँ के जगह-जमीन बेंच देव। जब बबुनी के बिआह में ना बेंचनी त अब काहे बेंचब! दूनो बबुआ लोग सरकारी नोकरी करत बा। बूढ़ऊ मालिक बेमारियो के हालत में गावे एक महीना आ के रहनीं। तोहरा लोग के भुलाइल ना होई कि उहाँ के सगे दुलहिन आ मालिको आके रहनीं। एजवा से गइला के एक महीना के बादे परलोक सिधार गइनीं। जनमें-धरती के मोह कबो ना छुटेला।"

उनकर बात सुनके रामदुलार सकपका गइलन आ अपराधी लेखा घुटकत कहलन—हमहूँ सभे के इहे जवाब देनीं। बाकिर गाँव के लोग के तू ठीक से जानत बाड़ऽ, जे मुँह में आवेला बक देला लोग।

लोचन बाबू बात मोड़े खातिर सहज ढंग से कहलन—"छोड़ लोग एह बात के, कहेवाला त कहवे करी। सच्चाई सामने अइवे करेला।" ई कहत ऊ खटिया पर से नीचे उतर के चन्दर के ओर देखत कहलन—"चल चन्दर, बगइचो घूम आईं। देखीं, अबकी आम कइसन बा, कटहर के का हाल बा। लीची मोजराइल बा कि ना।" ई कहत ऊ आगे बढ़े लगलन आ उनका पाछा-पाछा सभे चले लागल।

ऊ जेने से गुजरस, दुआरी पर काम करत औरत उनका के अजनबी लेखा घूरे लागें। नया उमिर के औरत उनका के बिना चिन्हले जनले, अपना माथा पर अँचरा रख लेवें लोग। बूढ़ औरत उनका के रोक के समाचार पूछ लेवे लोग और केहू-केहू पुरान बात इयाद करा के झकझोर देवे।

घूमघाम के जब लोचन बाबू देवनाथ के दुअरा पहुँचलन त देवनाथ पुछलन—"आज त रुकेब नू मालिक?"

"ठहर गइला पर, बेटा पतोह घबड़ा जाई। फेरू कबो आयेब त जरूर रुक जायेब।" ई कहते-कहते उनकर भीतर हलचल होखे लागल। बुझाइल कि उनका भीतर सुनगत ज्वालामुखी फूट जाई। ऊ अपना के सम्हारत खटिया पर बइठ गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जलपान तइयार बा, ले आवत बानी।" ई कहत देवनाथ भगत घर में घुस गइलन। जलपान करत लोचन बाबू पूछलन—"अब त अपनो गाँव के जमीन महंगा हो गइल होई?"

ई सवाल सुनते उनका अगल-बगल खड़ा लोग, एक दोसरा के मुँह देखे लागल। सभे के आँखिन में एक संगे अनगिनत सवाल उभर आइल।

पल भर ले चुप्पी पसरल रहल।

चुप्पी बेधत रामदुलार कहलन - "हँ, मालिक! हफ्तें भर पहिले नू अपनहीं के पट्टी के गौतम बाबू के लड़िका लोग नीमन दाम पर आपन जमीन बेंच गइल ह लोग।

देवनाथ बात लोकत कहलन—"हमनी के तीन चार पुश्त से रउरे जमीन से जीअत-खात आवत बानी सन। पुरखा-पुरनिया लोग हमनी के लालन-पालन अपने के जमीन से कइलस आ अब हमनियो एही से सब करत बानीं। अपने सभन के दया आ आशीष से दूना बेटा कलकत्ता कमाये गइल बाड़न से बाकिर हम ओकनी के कमाई के एक पइसा अपना में ना लगाइले। पइसा भेजेलन स त डाकखाना में जमा करा दीले। ओकनी के रुपिया ओकनिये के बाल बच्चन के कामे आवे। हमनी के दिन त कसहूँ कटिये जाई।"

उनका चुप होते रामदुलार बोललन—"देवनाथ भाई ठीके कहत बाड़न। हमरो बेटा पंजाब कमाये चल गइल बा। हमहू ओकरा रुपिया से घर खरचा ना चलाइले। उपरिये काम भले कुछ कर दीं।"

दूनो आदमी के बात सुन के लोचन बाबू के पपड़िआइल ओठन पर मुसकी पसर गइल। उनका ई बुझात देर ना लागल कि दूनो आदमी ई जनावे के चाहत बा कि ओह लोग के बेटा कमात बा आ अगर उनका खेत बेंचे के होखे त ओही लोग से बेंचस। बाकिर ई बात केहू खुल के ना कह सकल।

सब कुछ समझ के नासमझ बनत लोचन बाबू कहलन—"बड़ा खुशी के बात बा कि तोहरा लोग के बेटा कमात बा, अब तोहरो लोग के दुख दूर हो जाई।" ई कहत ऊ घड़ी पर नजर डललन आ उठ के कहलन—"अब चलें द लोग ना त आखिरियो बस छूट जाई आ हम ढेर तकलीफ में पड़ जायेब।" ऊ गते-गते आगे बढ़े लगलन आ उनका पाछा-पाछा आउरो लोग चले लागल।

बस पर चढ़ा के देवनाथ पूछलन—"अब फेरू कब आयेब मालिक? गेहूँ कटाये के बेरा चल अइतीं त ठीक रहित।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोचन बाबू मुसकात कहलन—"भगवान के मरजी, देखऽ, कब ले आई ले। हो सकेला कि जल्दिये आवे के पड़े।" ई कह के ऊ अपना सीट पर बइठ गइलन।

रामदुलार खँखारत कहलन— "हमनी पर दया रखल जाई।"

लोचन बाबू उनका बात के जवाब ना देलन।

बस में सवारी भरे लागल। लोचन बाबू गरदन झुकवले कुछ सोचत रहलन कि एकाएक उनका आँखिन के सोझा बेटा-पतोहन के तमतमाइम चेहरा नाच गइल आ ओह लोग के सवालन से घवाहिल भइल उनका करेजा के दरद बढ़े लागल। ऊ घबड़ा गइलन आ उनका चेहरा पर पसेना चुहचुहा आइल। उनका मन में आइल कि अबहियों ऊ बस से उतर के देवनाथ आ रामदुलार से कह देस कि गाँव के जमीन बेंच देब, गाँहक ठीक करऽ लोग। उतर गइला पर बस चलियो जाई त रात भर ठहर के, गाँहक ठीक करे खातिर आउरो लोग से बतिया लेब। चाहियो के ऊ बस पर से उतर ना सकलन आ बस खुल गइल।

लोचन बाबू रास्ता भर करेजा सोहरावत, तनाव से उबरे के कोशिश करत रहलन। रह-रह के उनका आँखिन के सोझा कबो गाँव के लोग के चेहरा उभरे त कबो बेटा-पतोह के। छव घंटा बाद जब ऊ बस से उतरलन त उनकर गोड़ काँपत रहे। दू चार डेग बढ़लन कि उनका करेजा के दरद आउरो तेज हो गइल, बुझाइल कि उनका झाँई आ जाई। ऊ अपना चेहरा पर के पसेना पोंछलन आ करेजा सोहरावत, इशारा से रेक्शावाला के बोलवलन। अपना के सम्हारत रेक्शा पर बइठत कहलन—"तेजी से चल, हमरा समय बहुत कम बा।"

रेक्शा उनका दुआरी पर रुकल त दूनो बेटा घर से बाहर निकल आइल लोग। ऊ बेटा लोग के कातर नजर से देखत, टूटत आवाज में कहलन—"हमरा के सहारा दे के उतारऽ लोग।"

दूनो बेटा आगे बढ़ के सहारा दे के उतारल लोग। ऊ दू चार डेग आगे बढ़लन त डूबत आवाज में कहलन—"अबकियो जनम-धरती के माटी माथा पर चढ़ा के लवट अइनीं। हमरा से ऊ ना हो सकल जवन हमरा करे के चाहत रहे। अब तूहीं लोग गाँव के जमीन बेंच अइह।" कहत उनकर आवाज डूब गइल आ ऊ बेटन के बाँह में झूल गइलन। दूनो बेटा उनका चेहरा पर गौर से देखत, अबोध लड़िका लेखा फूट-फूट के रोवे लागल लोग।

☐ अध्यक्ष, राजनीति बिज्ञान विभाग, गंगा सिंह कालेज, छपरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी के प्लाट

—कृष्णानन्द कृष्ण

मन ना लागत रहे। भोरे से मगजमारी करत रहीं बाकिर चंचल चित्त से विचार ओसहीं छटक जात रहे जइसे गरई मछरी। कवनो कहानी के प्लाट हाथ में ना आवत रहे। आ कहानी काल्हे देवे के रहे कृपानाथ जी के। मन कई तरह के चिंता में अझुराइल रहे। कबो घर के चिंता त कबो समाज के। काल्हुवे मनोजवा के माई फरिआवत रही—देखीं कइसन हाड़ कँपावे वाला जाड़ा पड़त बा। बड़का के इस्कूल खुलत बा, अधवँहियाँ सुइटर पेन्ह के स्कूल जाये के पड़बइस। करेजा दरक के रह जात बा। कसहूँ फूल सुइटर के जोगाड़ करीं। बात त उनुकर ठीके बा बाकिर हम करीं त का करीं? कवन जोगाड़ करीं। कई गो पत्रिका में कहानियो छपल बाड़ी स, बाकिर ओकनी के पारिश्रमिक नइखे आइल। इहे कुल्हि सोंचत रहीं तले मुनिया के टनक बोली से ध्यान टूटल। ऊ चाह के कप ध के भाग गइल रहे।

प्याली के चाह से उठत भाप धुआँ में तब्दील होत जात रहे जे में मुनिया डूबल जात रहे। ई बिचार मन में आवते हमार करेजा केरा के पतई अस काँप उठल। मन के झटका दे के चाह पीये लगलीं। काल्हे के बात ह। परमेसर भाई से भेंट भइल रहे बड़ा दुखी रहन। बिआह-शादी के बात चलल त लगलन कहे - 'का कहीं भाई, जमाना अतना खराब आ गइल बा कि कुछ कहल नइखे जात। बेटी के बाप भइल त सबसे बड़का पाप बा। लोग अतना नीचे गिर जाई हमरा बिसवास ना होत रहे, बाकिर अब त कुछ कहल नइखे जात, हम त खुदे भुक्तभोगी बानीं।

—'आरे, परमेसर भाई, अतना दुखी काहे खातिर भइल बाड़ऽ।'

—'दुखी होखे वाला बाते बा। बेटी के बिआह खातिर धउरत-धउरत जूता के एडी खिआ गइल, बाकिर बिआह ठीक होखे के नावें नइखे लेत। बर मिलत बा त घर ना आ घर मिलत बा त बर ना। अब अकुता के बेटी के भठिआइब ना नूँ।'

—'अरे घबड़ा जन, जहिया आ जहँवा ओकर सेनुरबंध होई उहाँ जाई।'

—'से त ठीक बा, बाकिर जमाना के रंग-ढग देख के देह में आग लाग जात बा। दुनिया में अइसनो लोग होई हमरा बिसवास ना होत रहे। आ उहो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन लोग जे समाज के क्रीम कहल जाला। जानऽ तार, एगो लइका देखनीं, पसन्दो पड़ल। रोपेआ-पइसा भी देवे के तइयार रहीं तले लइकवा के बाप कहलस—आपन घरवा हमरा बेटा के नाँवे लिख दीं।' मन त भइल कि मुँह नोच लीं बाकिर बेटी के बाप नू रहीं, उठ के चल देलीं। भला अइसन कसाइयन के गर में बेटी बिआह के का करब। एहिजा त गाय-गोरू अस मोल-तोल होत बा। बिआह के माने बदल गइल बा। सभे के नजर हमार धन-दौलत प लागल बा। एगो दोसरो लइका पसन्द पड़ल। खरो-खानदान ठीक रहे। जे कुछ मंगलन स हम हूँ कहत गइलीं। चले के बेरा पूछलीं कि अउरू कुछ नइखे नू छूटत, त लइका के बाप सरमाते कहलन का कहीं, अब त रउरा हीत हो गइलीं। हमरो बेटी के बिआह करे के बा। ओकरा खातिर दू लाख रोपया अलग से फिक्स डिपाजिट करवा दीं आ बिआह के दिन ध दीं।' ई सुनते हमार खीस एंडी से कपार प चढ़ गइल। हम उहाँ से उठ के चल अइलीं। हद हो गइल भाई! आदमीयत हेरा गइल बा।' —कहत-कहत परमेसर भाई के गला भराभरा गइल रहे।

—'पापा, चहवा सेरा गइल।' मुनिया के टोकारी से ध्यान टूटल।

चाह के कप उठा के चाह पीये लगलीं। मन कुछ असथिर भइल। कहानी के बारे में सोचे के शुरू कइलीं। कुछ बात लाइन प आवते रहे तले अखबार वाला अखबार फेंक गइल। फेरू व्यवधान पड़ल। सोंचे के सिलसिला टूट गइल। उठ के अखबार उठा ले लीं। पहिले पेज प बड़का-बड़का अछर में भारत आ पाकिस्तान के सचिव स्तर के वार्ता के खबर छपल बा। आ रिजल्ट तो सभे जानत बा, उहे ढाक के तीन पात। ओने वार्ता चलत बा आ एने काश्मीर में बम-पटाखा फूटत बा। समाचार कवनो उत्साहवर्द्धक नइखे। बुझाता नाव किनारे लागे नइखे जात। सभे के आँख कश्मीर प लागल बा। साँच के पक्ष में मुँह खोले के केहू तइयार नइखे। आपन बाजार बिगड़ जाये के डर बा। सभे दोसरा के चूल्हा प आपन रोटी सेंकल चाहत बा। सभे स्वार्थी हो गइल बा। जहाँ आपन हित नइखे सधे वाला ओहीजा केहू मुँह खोले के तइयार नइखे होत। अदमियत के त जइसे अकाल पड़ गइल बा।

गेट खुलला के आवाज से हमार नजर गेट का ओर जात बा। पंडित बिहारी लाल आ रहल बाड़न। अब छुट्टी हो गइल। कहानी गइल चूल्हा-भाड़ में। घंटा भर माथा चटाई तब जा के छुट्टी मिली। कतना बेर कहलीं—पंडित जी हमरा आफिस चल गइला के बाद अखबार अपने किहाँ मँगवा लेल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करीं आ हीक भर पढ़ीं, बाकिर ऊ काहे के माने जास। हँसत कहेलन—'अरे भाई तूँ खाली अखबारे के बात काहे करे ल। एहिजा अइला प कम-से-कम एक कप गरम-गरम चाहो त मिल जाला। एगो तूँ ही त टोला-मुहल्ला में बाड़S जे बुद्धिजीवी बा। अउरू सब ससुरा गूलर के कीड़ा बाड़न स। अकिल के जर में गरम पानी पटावे वाला। कवनो भिरी बइठ त खाली एक दोसरा के टंगघींचउवल के बात बतिअइहें स।' कहत ऊ अखवार ले के बइठ जात बाड़न। हम चाहत बानी कि पंडित जी जल्दी जान छोड़स कि हम कहानी शुरू करीं। कुछ विचार मन में आवतो वा त एने-ओने सँसर जात बा। कुछ न कुछ व्यवधान पड़ जात वा। पंडित जी से कइसे जान छोड़ाईं समझ में नइखे आवत।

—'भाई जी एगो बात प तूँ विचार कइलS हा कि ना?'

—'कवना बात प।' हम पूछलीं।

—'हई देख तारS, लोग पागल हो गइल बा।

सुनलीहाँ कि धरम बदलत बा लोग। का धरम बदल लेला से आदमी के दशा में बदलाव आ जाई! भला अइसन होइत त केहू दुखी ना रहित। एह नाँव प भलहीं कुछ लोग के राजनीति चल जाव। अउरू कुछ ना होई। अगर ई होखे के रहित नूँ त सउँसे भारत के लोग कहिये धरम बदल ले ले रहित। हमनी के धरम में जतना लोच बा ओतना कवनो धरम में नइखे।

—'पंडित जी छोड़ीं ई सब बात। अब त धरम के सतुआ राजनीति के पानी से सनाता आ ओकरा में जात-पात के नून मिरचा मिला के पिंड़िया अस आदमी-आदिमी के बाँट दीहल जात वा। ई सब छोड़ीं। अखबार पढ़ीं। अउरू आपन हाल चाल कहीं। हमरा तनी जल्दी बा। रउरा पढ़ी तले हम नेहा लेत बानी।' कहत हम घर के भीतरी चल अइलीं।

भीतर आवते मनोजवा के माई एगो सवाल के गेंदा हमरा ओर उछाल देली? —'ए जी दर-दशहरा अइसन परब आवत बा अबकियो लइकन के कपड़ा-लत्ता खरीदाई कि ना? सभनी के कपड़ा फाट गइल बा। हमनी के त कसहूँ काम चला लेब बाकिर लइकन के मन तूरल ठीक ना होई, कुछ उपाय करहीं के पड़ी। ना होखे त कवनो हीत-मीत से हथपइँच ले लीं। अगिला महीना में सधा देब।'

—'अच्छा'। कहके नेहाये खातिर चाँपाकल प चल गइलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनोजवा के माई के बात मन के बिचलित क देले बा। कहानी के सोंचल-सांचल प्लाट छने भर में छिन्न-भिन्न हो गइल। समझ में नइखे आवत का करीं। कृपोनाथ जी त हमरा के अलादीन के चिरागे बूझेलन। पत्थल प घीसीं आ चट दे कहानी तइयार। मन झंझुआ गइल। छोड़ीं कहानी के बात। आफिस जाये के तइयारी करीं। आफिस में कुछ फँफराह मिली त सोंचल जाई आ ओहिजे लिखा जाई।

स्नान करत खा उनुकर बात फेरू मन के मथ के रख देत बा। हथपइँच केकरा से मांगी। सभे के कुछ ना कुछ त लेलहीं बानीं। ना होई त हमहूँ अबकी त्योहारिक अग्रिम ले लेब। ई सोंच के मन लाज से गड़ गइल। भला नीचे के स्टाफ सब का सोंचिहें स। साहेबो लोग के करजा लेबे के पड़ जात बा। सोंचिहें स त सोंचिहें स। अउर कवनो दोसर उपायो त नइखे लउकत। इहे कुल्ह सोंचत हम नेहा धोआ के तइयार हो गइलीं।

खाना के थरिया आगा में रखत ऊ फेरु टोकारी देली—'कहनियाँ लिखाइल कि ना ?'

—'ना, हो कतनो मगजमारी करत बानी, कवनो प्लाट पकड़ में नइखे आवत। बिचार पूस के घाम अस सरक के भाग जात बा। एतना हड़बड़ी में कहानी लिखाला ! दाल-भात ना नूँ ह कि पका के चट-पट जीम लिहीं।'

—'रउरो त हद करत बानीं। इतना बड़-बड़ घटना रोज घटत बड़ुए। अखबारन के पन्ना भरल रहत बा। दहेज खातिर लइकियन के जरवला के खबर, बाजिब मजूरी मँगला खातिर घेर-घेर के जिन्दे जरावे के खबरन से अखबार भरल रहेला। कवनो घटना के लेके एगो कहानी रच दीं।' कहत-कहत उ हमरा ओर देख के मुसकिया देत बाड़ी।

आफिस में केहू ना रहे। सोंचलीं बइठल-बइठल कहनिया शुरू क दीं, ना त बात के झूठा हो जाइब। बिसवास टूट जाई। सादा कागज निकाल के प्लाट नोट करे के शुरू कइलीं। मन भीतरे से बनल आवत रहे। बुझात रहे अब कहानी लिखा जाई। मूड बन गइल रहे। कहानी शुरुओ क देले रहीं, तले बड़ा बाबू काँख त मोट फाइल दबवले चल अइलन।

—'सर, आज बड़ा सबेरे आफिस आ गइलीं'। कुछ खास बात नइखे नूँ। हम सोचलीं हाँ कि रउरा अकेले बानी एही से चल अइलीं हाँ। भीड़ बढ़ गइला प कवनो काम ना होख पावे।' —कहत बड़ा बाबू फाइल टेबुल प रख के खाड़ हो गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'कवन काम बा। बाद में ले आइबं।'

—'सर, देख के क दीहीं, दशहरा के टाइम बा। एल० टी० सी० मंजूर हो जाई त लोगन के दशहरा तनी खुशफहमी से मनावल जाई।'

बड़ा बाबू के बोली से टपकत दरद हमरा मन के भीतरे ले चीर देता। हम फाइल देख के ड्राफ्ट प दसखत क देत बानीं। फाइल बड़ा बाबू के देत चेतावत कहत बानी—'देखीं चार बजे से पहिले केहू के भीतरे मत आवे देब। हम बहुत जरूरी काम कर रहल बानी।'

बड़ा बाबू फाइल लेके खुशी मन से बहरी चल जात बाड़न। बाहर चपरासी के चेतावत बाड़न—'देख चार बजे ले पहिले साहेब के केहू डिस्टर्ब ना करी। बहुत जरूरी काम करत बाड़न। देख एल० टी० सी० भी मंजूर क देलन।'

बड़ा बाबू के खुशी आ उल्लास में भरल बोली सुन के हम फेरू छितराइल विचारन के लडी बनावत कहानी लिखे के शुरू करत बानीं। सोंचत बानी अगर आपने जीयल-भोगल सरिया के लिख दीं त कवनो कहानी से कम मजिगर ना होई। अगर कहानिये के माध्यम से अपना दिल के दरद से अगर लोगन के दिल के दरद के सुहरा सकीं, राहत दे सकीं त ओह से बढ़ के अउर का होई। का हमार दरद सऊँसे समाज के दरद नइखे? का परमेसर भाई के बेटी के बिआह के दरद खाली उनुके बा? त काहे ना एही फूलन से कहानी रूपी माला गूँथ दी। सामने से कागज उठा के लिखे के शुरू क देलीं। लाइन-लाइन में करेजा काढ़ के रखे के कोसिस करत बानीं। कलम सरपट धउरे लागल रहे, तले चपरासी सामने आ के खाड़ हो गइल। ओकरा हाथ में टेलिग्राम रहे। ऊ चुपचाप हमरा सामने मुँह लटकवले खड़ा रहे।

फोन के घंटी टुनटुनाइल। हम चोंगा उठा लेलीं। कृपानाथ जी के फोन बा। कहानी खातिर। उनुका के फोन प ठहरे के कह के चपरासी के हाथ से टेलिग्राम ले लेत बानीं। टेलिग्राम के छोट मजमून एटम बम अइसन विस्फोट कइलस—'शीला के स्टोव फटला से मौत'। हमरा मुँह से अचक्के निकलल— ई सब झूठ ह। अइसन ना हो सके। आ हाथ से फोन के चोंगा छूट के गिर गइल रहे। सामने टेबुल प टेलिग्राम आ कागज प कहानी के प्लाट छितराइल पड़ल रहे।

☐ दक्षिणी अशोक नगर रोड न०-आठ बी, कंकड़बाग, पटना-८०००२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघुकथा

पाप भइल कि पुन्न

—चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र

आजु राजैय्या फिनु उपराइल बा। कहत बा कि दू दिन से मुँह में एको दाना ना परल। भूखन चलत नाँही बनत। बइठत-बइठत केहू तरे रास्ता पार लागल हऽ। बेटी बेराम बा। बरतन मांजे जाले तो रेड्डी साहेब के मेहरारू बासी-तिरासी भात रोटी देली। सबेरे के खरमेटाव होला। भात रिन्हेले तो चिन्तापाण्ड (इमली) के पानी से भरि पेट एक जून खाइल जाला। सांझ के बरतन मांजि के रेल के लाइन पर कोइला बीने जाले। वोही से एक टाइम क चूल्हा जलेला। रेड्डी साहब के दिन क बचल खुचल खायका भी काम भर मिलि जाला। बेटी बेराम बा हम दोनू जना भूखल बानी।

राजैय्या अउर ओकरी बेटी खातिर पिलास्टिक के खोंखा में भात-दाल रोटी-तरकारी देके बेमारी के इलाज खातिर दस ठो रुपिया आरो एगो पुरान साड़ी दिहलीं। सोचे लगलीं ई हम का कइली कि ओकर बेटी क ई हाल भइल। एकर सजाइ भगवान् से हमका का मिली!

राजैय्या जाति क ढेढ़, हमरे गोपाल नगर बगइचा के चौकीदार रहल। ओकर बेटा दमाद मकान बनावे वाला मिस्तरी रहलन सऽ। बहू, बेटीओ निमन मजदूरी पावऽसऽ। बड़ा आराम से उन्हनी क गिरहस्ती चलत रहे। एही बीच हमार बड़का बेटा ओमान से कमा के लवटलन। अब राजैय्या के बेटा चन्द्रय्या अउर दमाद राघवय्या हम के धइलन स। अपना बेटा से कहि के हमनी के पासपोर्ट बनवा दीं और ओमान चाहे दोबाई जायेके इतजाम करा दीं। उहाँ राजमिस्तरी के बहुत मजदूरी मिलऽता। बेटा कई बार टाल दिहलस। तोहनी का एहीजा नीमन कमाई कर ताड़ सऽ। दुबाई काहे के जइबऽसऽ। मगर जब हमार बेसी चिरौरी होखे लागल, राजैय्यो अपनी बेटी बहू के हमरी गोड़ पर गिरावे लागल, तब हम बेटा के मजबूर कऽ दिहलीं। ऊ आपन मुसलमान दोस्त ठीकेदार के बोलि के पासपोर्टो बनवा दिहलस अउर दोनू के मसकत भेजवा दिहलस।

कुछ दिन बाद राजैय्या के बहू दोसर मरद के साथ भागि गइल अउर राजैय्या व ओकर बेटी चोरी-चोरी आम सपोटा बेंचत में पकड़ा गइला पर

[शेष पृ० २५० पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

'भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छन्द' एगो संक्षिप्त समीक्षा

—आचार्य अम्बिकादत्त त्रिपाठी 'व्यास'

पुस्तक—'भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छन्द'। लेखक—डॉ० व्रजभूषण मिश्र। प्रकाशक—भारती प्रकाशन, खजांची रोड, पटना-८००००४। पृष्ठ संख्या—९८+४। मूल्य—छात्र संस्करण २० रु० : पुस्तकालय संस्करण ६० रु०।

डॉ० व्रजभूषण मिश्र जी के एह किताब के कुल्हि कलेवर ९८ पृष्ठ के बा जवना में सबसे पहले अलंकार पर २२ पृष्ठ, रस पर ४५ पृष्ठ आ छन्दन पर २१ पृष्ठन में काम गइल गइल बा। पूर्व पीठिका 'क' प्राक्कथन आ पूर्व पीठिका 'ख' में अति संक्षेप में काव्य के परिचय, भेद (गद्य, पद्य, मिश्र), दृश्य अउर श्रव्य काव्य, प्रबन्ध काव्य, खण्ड काव्य मुक्तक काव्य, ध्वनि, गुणीभूत, अधम (अलंकार प्रधान) काव्य, काव्य के हेतु, काव्य के प्रयोजन, काव्य के गुण (माधुर्य, ओज, प्रसाद), काव्य के दोष शब्द दोष, अर्थ दोष अवरु छन्द दोष,, रीति (वैदर्भी, गौड़ी आ पांचाली, शब्द शक्ति (अभिधा, लक्षणा आ व्यञ्जना) पर विचार कइल गइल बा।

माधुर्य, ओज आ प्रसाद गुणन के उदाहरनो दीहल गइल बा जवन सटीक होखतो तनी अउर खोज के अपेक्षा करत बा। शब्द दोष के उदाहरन छन्द दोष के भी उदाहरन बनि सकत बा। वैदर्भी रीति के उदाहरन में प्रणयी जी खूब फवत बाड़ें त गौड़ी में 'राही' जी आपन कमाल देखा रहल बाड़े। मिश्र जी के ई खोज काबिले तारीफ बा। लगभग पौन पृष्ठ में शब्द शक्तियन के चर्चा ओकरा शक्ति पर प्रश्नवाचक चिह्न अइसन लागत बा। अपना पूर्व पीठिका 'क' में उहाँ का एकरा के विषय प्रवेश मनले बानी, जवन ठीके बा, बाकिर अतना विषय प्रवेश के बिना केहू रस, अलंकार आ छन्दन के विषय में काहे जानी? काहे जानल चाही?

हम एहिजा पुस्तक के मुख्य प्रतिपाद्य विषय "भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छन्द" का विषय में कुछ कहल चाहत बानीं। स्वयं लेखक श्री मिश्र जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अलंकार के परिभाषा आ परिचय' शीर्षक निबन्ध में लिखतानीं कि "काव्य में अलंकार के महत्व रस आ गुण के बाद मानल जाला"। एकरा समर्थन में उहाँ का वामन के मत के उल्लेखो कइले बानीं।

हम एहिजा विनम्र निवेदन करत उहाँ से पूछत बानीं कि अपना एह पुस्तक के 'नामकरण' का सम्बन्ध में भी उहाँ का एह नियम के पालन काहे ना कइलीं? नावों नीक रहित "भोजपुरी काव्य में रस-अलकार-छन्द। रस त आत्मा ह। ओकर विवेचन आ वर्जन त अइसहूँ पहिले होखे के चाहत रहल हा। अबतक के लक्षण ग्रन्थ उदाहरण बड़ले बाड़न स। लागता कि प्रस्तुत पुस्तक के शोभित (अलंकृत) करे खातिर मिश्र जी पहिले अलकारे से शुरू कइले बानी। ठीके बा, घीव के लड्डू टेढ़ो भला।

कुछ विचारक विचारन के महत्त्व देत कबो कबो कहि देलन—तुम व्यक्त कर सको जन-मन में मेरे विचार वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार?

'पन्त' जी हालाँकि अपने अलंकारवादी रहलन बाकिर कहा जाला कबो-कबो अइसनो। ठीक एकरा विपरीत मिश्र जी अपना ओही निबंध में लिखतानीं कि "काव्य का काव्यत्व अलकृत शब्द आ अलकृत अर्थ द्वारा प्राप्त होला। अलंकार रस का उत्पत्ति में भी सहायक होला। भाषा चाहे विचार आ रचना विधान में अलंकारन के बिना कबहूँ चमत्कार आइये नइखे सकत। अलंकार भाषा के स्वाभाविक अंग बा। अलंकार के भाषा से अलग नइखे कइल जा सकत। बिना अलंकार के भाव पूरा-पूरा ना प्रकट कइल जा सके आ ना भाषा बनि सकेला"। अलंकारन पर मिश्र जी के ई विचार सर्वथा आपन बा, नवीन बा आ निचोड़ नीयन बा।

अलंकारन के भेद शीर्षक निबन्ध में मिश्र जी शब्दालंकारन के आवृति-मूलक, श्लेषमूलक आ चित्रमूलक के भेद क के अर्थालंकारन के सादृश्यमूलक, विरोधाधंमूलक, श्रृंखलामूलक, गूढ़ार्थ प्रतीति मूलक, गोपनमूलक, लोकन्याय-मूलक आ अतिशतमूलक भेद उपभेद कइले बानीं। संसृष्टि आ सकर के उभयालंकार का श्रेणी में रखले बानीं।

शब्दालंकारन में अनुप्रास, चमक, श्लेष, वीप्सा आ वक्रोक्ति कुल्हि पाँच गो अलंकारन के लक्षण संस्कृत में आ उदाहरण भोजपुरी में दीहल गइल बा।

विश्वनाथ अपना साहित्य दर्पण में अलकारन के "अस्थिर धर्म" मनले बाड़े—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्तेऽ ङ्गादिवत् ।। दशम परिच्छेद

मिश्र जी अनुप्रास के छेकानुप्रास, वृत्यनुप्रास आ लाटानुप्रास के लक्षण-उदाहरन देले बानीं जबकि विश्वनाथ श्रुत्यनुप्रास, अन्त्यानुप्रास मानि के पाँच गो लक्षण आ उदाहरण देले बाड़े—

"अनुप्रासः पञ्चधा ततः"

यमक के तीन गो उदारण मिश्र जी देले बानीं। श्लेष का उदाहरन में बलवीर आ किरन जी खूब जमल बाड़ें। वीप्सा आ वक्रोक्ति के उदाहरनों बड़ा सटीक बा।

एह तरे शब्दालंकारन के बाद अर्थालंकारन में भी मिश्र जी लक्षण त सँस्कृते में देले बानीं बाकिर उदाहरन खोजे में बड़ा मेहनत से काम लेले बानीं।

अर्थालंकारन में कुल्हि अठारह गो अलंकारन के लक्षण उदाहरन दीहल गइल बा जवन काफी सटीक आ सुरुचिपूर्ण बा। इन्हनी में उपमा, अनन्वय, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान्, दीपक, उल्लेख, अपह्नुति, विभावना, स्वभावोक्ति, समासोक्ति, लोकोक्ति प्रतीप, अत्युक्ति, अतिशयोक्ति, संसृष्टि प्रश्न आ उत्तर अतना अलंकारन के लक्षण आ उदाहरन बाटे। उदाहरन में किताबन आ लेखकन के नाम दे दे के त आपन अध्ययन आ नीर क्षीर विवेक से काम लीहल गइल बा। बीच-बीच में अर्थसंगति खातिर निर्देश भी बड़ा काम करत बा। भोजपुरी के उदाहरन खोजे में मिश्र जी सचमुच बधाई के पात्र बानी। आशा बा पाठकन के मन खिंचा जाई आ ई ग्रन्थ आगे वाली पीढ़ियन खातिर मील-स्तंभ के काम करी।

पुस्तक के दोसरका खण्ड "भोजपुरी काव्य में रस" शीर्षक में रस, विभाव (आलम्बन, उद्दीपन), स्थायी भाव, अनुभाव आ संचारी भावन के विशेष वर्णन कइल गइल बा। रस संख्या में भक्तिरस आ वात्सल्य रस के भी चर्चा बड़ा नीमन लागत बा। हमहूँ अपना निबन्ध "भोजपुरी साहित्य में हास्य व्यंग्य" में एकर चर्चा कइले बानीं।

रस सिद्धान्त का सम्बन्ध में कथनीय बा कि एकर चर्चा बड़ा कम हो गइल बा। ओइसे अतना छोट ग्रन्थ में विस्तृत व्याख्यान सम्भव भी ना रहे काहे कि एह पर अलगे अलग ग्रन्थो रचाइल बाड़न स। हिन्दी में त ढेर खा ले मोटे-मोटे ग्रन्थ बड़ले बाड़न स। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के "रस-मीमांसा"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ डॉ० नगेन्द्र के "रस-सिद्धान्त" त बड़ले बाटे, एह विषय पर ढेर खा ले 'थीसिसो' आ गइल बाड़न स। बाकिर लगभग एक पृष्ठ में भट्ट लोल्लट, शकुक, भट्टनायक आ अभिनव गुप्त के मत आ साधारणीकरण आ मधुमती भूमिका जइसन गम्भीर विषयन पर अतना सक्षेप में कुछ कहल खटकत बा, कारण कि बात जइसन चाहीं, स्पष्ट नइखे हो पावत आ जिज्ञासा बनले रहि जात बिया।

ई मधुमती भूमिका त चित्त के अइसन भावदशा ह जवना में सब कुछ अलौकिक, रसमय, दिव्य, शान्त अउर स्वर्गीय लागे लागेला। ऊ एगो अइसन अद्वैतवाद ह जहवाँ अलका में रहत खा भी यक्ष खातिर ओकर पत्नी सर्वत्र लउके लागेले।

प्रासादे सा पथि पथि च सा पृष्ठतः सा पुरः सा
सा सा सा सा जगति सकले कोऽयमद्वैतवादः॥

ई त ह सहृदयन खातिर हृदयावर्जक भावदशा जहवाँ स्वप्न भी सत्य नीयन, कल्पना भी प्रत्यक्ष नीयन, अदृष्ट भी दृष्ट नीयन आ अनुमित भी अनुभूत नीयन लागे लागेला। जहवाँ सब कुछ मधुमान् हो जाला। वैदिक ऋषियन के स्वर देखहीं लायक बा—

"मधुव्वाता ऋतायते, मधुक्षरन्ति सिन्धवः,
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः, मधुमत्पार्थिवं रजः"

जहवाँ पार्थिव रज भी मधुमान् हो जाला आ लतमरुआ धूरि भी मधुमती। ई अइसन भाव दशा ह जहवाँ चित्त वितर्कातीत हो जाला। पार्थक्य में ही दुःख आ मोह होला। जहवाँ पार्थक्य नइखे ओहिजे सात्विकी वृत्ति के उदय होला। जेकरा उदय होते दुःख आ मोह आपन स्वरूप खो के समरस हो जाला आ ओहिजे भेद भी अभेद आ दुःख में भी सुख के अनुभूति होखे लागेला। ई हृदय के अइसन भावदशा ह जहवाँ लौकिक क्रोध, शोक आदि भाव आपन लौकिकता छोड़ि अलौकिक सुख के ही सचार करे लागेला। ई एगो अइसन भावदशा ह जहवाँ ससार के सभ वस्तु दिव्य आ अलौकिक हो के रहि जाले। तनी देखीं पातञ्जल योग सुत्रन के भाष्यकार भगवान् व्यास जी के शब्दन के—

"मधुमतीं भूमिकां साक्षात्कुर्वतोऽस्य देवाः सत्व शुद्धिमनुपश्यन्तः स्थानैरुपनिमन्त्रयन्तेभो इहास्यताम्, इहरम्यताम्, कमनीयोऽयंभोगः, कमनीयेयं कथा, रसायनमिदं जरा मृत्युं बाधते, वैहायसमिच्यानम्, अमी कल्पद्रुमाः, दिव्ये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रोत्र चक्षुषी, वज्रोपमः कायः स्वगुणैः सर्वमिदमुपार्जिमायुष्यता, प्रतिपद्यता-मिदमक्षयममरम जरस्थानमिति" ।

जवना भावदशा में अपना साधना के बल पर योगी लोग समाधिस्थ होके चिरकाल तक रहेलन ओही भावदशा में प्रातिभज्ञान सम्पन्न कवि लोग स्वाभाविक रीति से अपना रसमयी आ मधुमयी वाणी के वर्षा करत अपने भींजत आ सभका के भिजावत ठहरल रहेलें। इहे भावदशा रसदशा भा ब्रह्मा-स्वाद सहोदरता कहाले जहवाँ सभ प्रकार के लौकिक भावन के त्यागि के आन्तरिक आनन्द के ज्योति से दीप्त होके अश्रुप्रवाह पुलकावली आदि के संचार होखे लागेला। इहे ऊ भावदशा ह जहवाँ मन शान्त होके 'लहरन पर राजहंस लेखा पँवरे लागेला —"चलँस्तरंगेष्ठिव राजहंसः" । एह अवस्था में पहुँचल कवि ही क्रान्तदर्शी कहालाँ ।" (लागता कि हमहूँ कुछ बहकत बानीं, रस के बात बा, तनी बहकिये गइलीं त का भइल ?) । हम एहिजा मिश्र जी से निहोरा करब कि उहाँ का चित्त के चित् मति कहीं, मति लिखीं, बड़ा भ्रम पैदा हो सकत बा। चित् + मय = चिन्मय हो जाला। चित्त से आगा कवनो शब्द ना लागे। होखबो ना करे।

प्रस्तुत प्रबन्ध में मिश्र जी खूब मनोयोग से रमल बानीं। उहाँ के "रस-रसांग-सरणी" त एह खण्ड के पूरी तरह खोलि के रखि देत बिया। रस ओकर स्थायी भाव, आलम्बन आ उद्दीपन विभाव अनुभाव आ संचारी भावन के एके जगे समायोजन सचमुच बड़ा आह्लादकारी बनि परल बा। मिश्र जी के एह पुस्तक के आपन विशेषता बा कि कुल्हि रसन के ओकर आलम्बन, उद्दीपन, अनुभाव आ संचारी भावन के अलगे अलग उदाहरन मिलि जात बाड़े स। अउर लक्षण ग्रन्थन में ई बात नइखे देखे के मिलत। संचारी भावन के अलग-अलग उदाहरन खोजे में त मिश्र जी का कमाल हासिल बा। ई बात हम पहिलहूँ कहि चुकल बानीं। साँचो, मिश्र जी एह काम खातिर हमेशा इयाद कइल जाइब। ओही तरे अनुभावन के अलगे अलग उदाहरन खोजे में भी कम मेहनत ना लागल होई। बाकिर खाली उदाहरने ना ह रस शास्त्र। उदाहरन त विषय (शास्त्र) के समुझावे खातिर थोरकी-सा निर्देश मात्र होला। प्रतिपाद्य त कुछ अउरे होला। हास्य रस के उदाहरण में आधा ६४ पृष्ठ आ पूरा ६५ पृष्ठ भरियो देला पर ओइसन भाव नइखे बनि पावत जइसन शैदा जी के निम्नलिखित दू पंक्तियन में —

"ई नगारा के ह घेरा या कि घेरा नाद के
या कि ह चूतड़ ई हमरा द्वारिका परसाद के" अथवा बेधड़क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनारसी के— "बड़े आदमी भूल जाते हैं अक्सर
बनारस है जाना तो जाते हैं बक्सर" में बनि गइल बा।

ओइसहीं शान्त रस के उद्दीपन दिभाव, अनुभाव आ सचारी भावन के उदाहरण में पृष्ठ ६६ से ७१ तक पृष्ठ के पृष्ठ उदाहरने भरल बाड़न स। अतमा ना चाहीं। हम एहिजा एगो अउर निवेदन मिश्र जी से करब, अलंकारन अस लक्षण भी रसन के संस्कृत में दे देवे के चाहत रहल हा काहे कि ऊ इयाद जल्दिये हो जाइत। गद्य में तनी झझट होई। पुस्तक के तीसरका खण्ड 'भोजपुरी काव्य में छन्द' में छन्दन के परिभाषा, परिचय, कुछ पारिभाषिक शब्द, आ लौकिक छन्दन के परिचय का सँगही सँगे ३१ गो छन्दन के उदाहरन खोजल गइल बाटे। छन्दन के परिचय गद्य में दीहल गइल बा। लोकधुनन के उदाहरन उपरावे में मिश्र जी मिहनत से काम ले ले बानीं। उदाहरन आ शेर, गजल आदि उर्दू-फारसी के छन्दन का साथ ही साथे विदेशी छन्द सॉनेट आ हाइकू पर भी विचार कइल बाटे।

कुल्हि मिला के मिश्र जी के ई किताब भोजपुरी में एह तीनू शास्त्रन पर चर्चा करे में आपन विशेष महत्त्व राखत बा। ई पहिलका सोपान (सीढ़ी) ह जवना पर चढ़ला बिना केहू दोसरका पर चढ़िये नइखे सकत। एह से एकर महत्त्व अउरी बढ़ि गइल बा। भोजपुरी में एकर ढेर जरूरत रहे ई ओकरो पूर्त्ति करत बा। पुस्तक के छपाई, सफाई आ मुख्य पृष्ठ भी आकर्षक बा। अशुद्धि बहुत कम बाड़ी स। कुल्हि मिला के ई पुस्तक उपादेय त बड़ले बा, सराहनीय भी बा।

☐ मोडेल इंस्टीच्यूट, आरा-८०२३०१

[पृष्ठ २४४ का शेष]

प्रोफेसर रेड्डी उन्हनी के नोकरी से निकाल दिहलन। ऊ दूनू पहाड़ के नीचे अपनी जाति भाई के बस्ती में छान्ही छवा के एगो माटी के घर में रहे लगलन सऽ। मसकत से न दमाद कवों चिट्ठी दिहलसि अउर न बेटा। राजैय्या अउर ओकर बेटी कहेले कि ऊ दोनूं मरि बिला गइलन सऽ और हमनी के दुख भोगे के ए देश में छोड़ि दिहलन सऽ। हम सोचत रहीलां कि ई हम का कइलीं। ई पुन्न भइल कि पाप भइल।

☐ प्रबन्ध सम्पादक 'संकल्य', हिन्दी अकादमी, १२०-ए, नेहरूनगर पूर्व,
सिकन्दराबाद-५०००२६, आन्ध्र प्रदेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

भक्ति आ शृंगार के रस-कलश 'गीत कलश'

—गणेश चौबे

पुस्तक—'गीत कलश' (भोजपुरी गीत-कविता-संग्रह)। रचयिता—श्यामजी सिंह 'मधुप'। प्रकाशक निर्बल के बल राम, नवादा, आरा (बिहार)। संस्करण-प्रथम, १९९३। पृष्ठ संख्या—१०८+१०। मूल्य—जन संस्करण १५ रुपया; डिलक्स संस्करण २१ रुपया।

श्री श्यामजी सिंह 'मधुप' एगो सुकवि हउएँ, जे हिन्दी आ भोजपुरी में बहुत दिन से गीत लिखत बाड़ें। लेकिन उनका एह सब के प्रकाशित करे के कबहीं चिन्ता ना रहल। ई खुशी के बात बाटे कि ऊ अपना छितराइल भोजपुरी गीतन के सहोर-बिटोर आ कुछ नया रचल गीतन के ई संग्रह 'गीत कलश' अब काव्य रसिकन का सामने रखले ह।

एह 'गीत कलश' में नब्बे गीत आइल बाटे। सबसे पहिले धेयान भक्ति गीतन का तरफ जात बाटे। एहमें 'निरगुन' आ कृष्ण सम्बन्धी गीतन के प्रमुखता बाटे। एह से अइसन मालूम हो रहल बाटे कि कवि तुलसीदास लेखा सगुण आ निर्गुण भक्ति में कवनो भेद नइखे मानत। प्रेम गीतन में विरह गीत के प्रमुखता बाटे। देखे में लागत बाटे कि कवि का हृदय में जइसे विरह के आग धन्हकत होय। शेष गीतन में भारत के गुनगान, फौजी जवानन के तारीफ बाटे, गरीबी, सामाजिक आ राजनीतिक भ्रष्टाचार के मार्मिक तसबीर बाटे। कुछ गीत भोजपुर, भोजपुरी आ कुँअर सिंह का सम्बन्ध में बाटे। एह से साफ नजर आवत बाटे कि गीतन के दायरा व्यापक बाटे। भाषा में प्रवाह बाटे। एह गीतन में लोक भावना के सफल अभिव्यक्ति भइल बा। पुस्तक का शुरू में बीस पेज में विद्वानन के सम्मति आ समीक्षा आइल बाटे, जवना में एह गीत संग्रह का खूबी पर प्रकाश डारल गइल बाटे। एह सुन्दर कृति लागि हम कवि के बहुत-बहुत साधुवाद दे रहल बानी आ मंगल कामना करत बानी।

☐ बंगरी, वाया-पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारन (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा : प्रयोग के विविधता आ मानकता के संदर्भ

—डॉ० रघुवंश मणि पाठक

[बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन में पठित निबन्ध]

जब कवनो भाषा चेतना के करवट लेले तब ओकरा में मानकता के प्रश्न उठे लागेला। एकर प्रमाण विश्व के अनेक भाषावन के इतिहास में देखल जा सकता। शायद मानकता के पहिलका सवाल भी भारत भूमि पर ही उठलो रहे। संभवतः ईसा के जन्म से कई सौ वर्ष पहिले जब आर्य आ द्रविड़ संस्कृति का मिलन से आर्यभाषा का दैनिक प्रयोग लड़खड़ाये लागल रहे। ओह जमाना के बड़ साहित्यकार आ भाषाविद लोगन के चिन्ता के प्रमाण के रूप में 'ताण्ड्य ब्राह्मण' ग्रन्थ के एह वाक्य के प्रस्तुत कइल जा सकता—'अदुरुक्तवाक्य दुरुक्तमाहुः' अर्थात (द्रविड़ लोग) 'आसान से आसान वाक्य के भी कठिन कहेलन'। एकर अभिप्राय ई भइल कि वैदिक आर्यभाषा द्रविड़ लोग का मुँह में जाके अपना मूलरूप में सुरक्षित ना रहि सकल जेवना से एक-एक शब्दन के कई-कईगो बिगड़ल रूप प्रचलन में आ गइल होइहें। एही से भाषा में 'संस्कार' के जरूरत पड़ल होई आ संस्कार कइला से ही वैदिक भाषा के बाद संस्कृत पैदा भइल होई। एह बात के काटे खातिर विद्वान लोगन के कमी नइखे आ ओह लोगन का तर्क से हमरा कवनो एतराज भी नइखे, बाकिर ऊपर का प्रमाण से हमरा अइसने महसूस होला। 'संस्कृत' शब्द के शाब्दिक अर्थ 'संस्कार कइल' होला भी।

यूरोप के कई प्रमुख समर्थ भाषा के प्रसंग में भी मानकता के प्रश्न बार-बार उठत रहल बा। प्रमुख विद्वान आ अपना जमाना के चोटी के लेखक सिसेरो लैटिन भाषा के मानक स्वरूप संवारेवाला आदर्श प्रतिनिधि का रूप में प्रतिष्ठित रहलन। फ्रांसीसी भाषा में भी मानकता के प्रश्न जमाने से उठत रहल बा आ आजुओ जारी बा। अब त ओइजा ई सामान्य प्रकृति बनि गइल बा कि हर पचास बरिस पर उहाँ अपने-आप शब्दन के नवीन प्रयोग के आधार पर मानक भाषा के तलाश आरंभ हो जाला काहे कि ओह लोगन के ई मान्यता बा कि भाषा के आदर्श मानक रूप अतीत में ना होके भविष्य में होला। ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात शत-प्रतिशत सही बा काहे कि कवनो व्याकरण गढ़ि के भाषा के ओमें ना खोजल जा सकेला वल्कि वर्तमान भाषा के प्रवृत्ति आ रूप के विवेचन के नाम व्याकरण होला।

ऊपर के कथन के वावजूद ई बात एकदम सच हवे कि मानकता के निर्धारण में भी हर भाषा में कुछ युगपुरुष पैदा होलन। भोजपुरी भाषा भी कवनो युगपुरुष के बाट जोह रहल बा। हिन्दी भाषा के मानकता के संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी जहाँ कोतवाल के भूमिका निभवलें रहलन ओहिजा कामता प्रसाद गुरु आ किशोरी दास वाजपेयी जइसन समर्थ विद्वान लोग व्याकरण के निर्माण कइके शास्त्रीय नियम के अंकुश लगवलन। ओइसे हिन्दी में मानकता के सवाल आजुओ जारी बा काहें कि भाषा पर कवनो व्याकरण के नियम एगो निश्चित काल सीमा तक ही नियमन राखि सकेला, काहे कि भाषा परिवर्तनशील होले आ इहे परिवर्तनशीलता ओकर जीवन्तता भी ह। एहि से पाणिनि जइसन महारथी वैयाकरण के कालजयी व्याकरण 'अष्टाध्यायी' में परिवर्तित भाषा के स्वरूप देखिके वार्तिकार कात्यायन का पन्द्रह सौ (१५००) स्थल पर संशोधन करेके पड़ल रहे। भाषा कवनो कुआँ के जल ना होला ऊ त हमेशा बहेवाली नदी के तेज धारा के पानी जइसन होला। एही से व्याकरण पर आधारित सिद्धान्त जेवना के सूत्र रूप में ई कहल जा सकेला कि भाषा के मानकता के संबंध में 'अइसन कहऽ आ अइसन मत कहऽ' के सिद्धान्त ना लागू होखे के चाहीं। एह से प्रसिद्ध भाषाशास्त्री वान्द्रियेज महोदय एकर खलि के आलोचना कइलन आ साफ शब्दन में कहलन कि कवनो भाषा के मानक स्थापना के ई सार्वभौमिक सिद्धान्त कबो ना हो सकेला। भाषा के मानक रूप अइसन आदर्श रूप होला जवन सतत प्रयत्न का बावजूद भी प्राप्त ना होला। ऊ खाली भाषा के प्रयोग करेवाला लोगन के मन में बनल रहेला आ ओही के पावे का प्रयत्न में भाषा के एगो आदर्श रूप स्थापित हो जाला। परम्परावादी लेखक प्राचीन तत्सम रूप के आग्रही होलन आ नया उखमजल लेखक लोग तावड़-तोड़ तद्भव आ जमाना के घुलल-मिलल शब्दन के प्रयोग करे लागेलन। पाठक का सामने त दूनों कोटि के लेख परोसाला। आ ऊ अनजाने में भाषा के एह गंगा-जमुनी मिलन के संगम में नहाइ के निहाल हो जाला। दुनो प्रयोग जनता स्वीकार कइ लेले। बस भाषा में मानकता के निर्धारण हो जाला। सामान्य व्यवहार में आ सहज लिखित प्रयोग में भी इहे प्रयोग स्थापित हो जाला, बाकिर नया-पुराना के प्रयोग के ई शाश्वत संघर्ष भाषा में चलऽता आ चलते रही। एहि से ई बात कहल जाला कि मानक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक होला आ ओकर संबंध भाषा के आन्तरिक आ वाह्य संरचना से ना होके सामाजिक स्वीकृति से होला।

निष्कर्ष का रूप में त ई बात सभका माने के परी कि भाषा के मानकता भले ही सामाजिक स्वीकृति होले बाकिर ओके मानक रूप में प्रतिष्ठा दिलावे वाला लोगन में भाषाविद, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षित लोग, अध्यापक, प्रकाशक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्था के साथ-साथ शासन के भी निश्चित भूमिका होला। एहि से भोजपुरी भाषा के मानकीकरण खातिर हर स्तर से प्रयास होखे के चाहीं आ अब परोक्षरूप में होतो बा।

भोजपुरी भाषा के मानकता के संदर्भ में हम गर्व के साथ ई कहि सकऽ तानी कि आजु भोजपुरी के लेखक आ पाठक मानक प्रयोग के प्रति ना खाली सजग हो गइल बाड़न बलिक सतत प्रयासरत भी बाड़न। बाकिर 'अइसन कहऽ आ अइसन मत कहऽ' के व्याकरणिक सिद्धान्त के आधार पर कइल कवनो निर्णय भोजपुरी के विकास में ना खाली बाधक बनि जाई बलिक संस्कृत आ लैटिन के तरह ओकर सहज आ सतत प्रवाहित शत-शत निनादित धारा के बाँधे के आ सुखावे के अनजाना प्रयास सिद्ध होई। उदाहरण के तौर पर भोजपुरी अकादमी पटना द्वारा मानकीकरण का संबंध में सम्पादक मण्डल के प्रयास जवन कई माने में सराहनीय भी बा, बाकिर बहुत हदतक 'अइसन करीं आ अइसन मत करीं' के बहिष्कृत सिद्धान्त पर आधारित बा। एसे हम विनम्रतापूर्वक ओह पर फेरू विचार करे खातिर निहोरा करऽतानी।

कवनो भाषा के विकास के मूल आधार ओकर बोली होलिन। एगो वृक्ष जइसे अपना जड़ का सहारे खड़ा रहेला आ भोजन-पानी पाइ के विकसित होला ओइसहीं भाषा के वृक्ष भी अपना बोलिन का जड़ से ना खाली भोजन-पानी पाइ के आकारित होला बलिक विस्तारित भी होला। एही से हर भाषा में स्थान-भेद से प्रयोग-भेद भी रहेला काहें कि इहे भेद स्थानीय बोली के मुख्य आधार होला। उदाहरण का तौर पर बलिया शहर में 'जा तानी' क्रिया रूप के प्रयोग होला जबकि जिला के पश्चिमी छोर पर ओह क्रियापद खातिर 'जात हईं', उत्तरी सीमा पर 'जात बाटीं', पूर्वी सीमा पर 'जा तानी सन' आ सुदूर दक्षिणी पूर्वी सीमा पर 'जात बड़ुए' रूप के प्रयोग होला। अइसना में कवनो एगो रूप के मानक माने के पड़ेला। एहितरे हर भाषा में स्थान-भेद से प्रयोग-भेद रहेला। लिखित आ उन्नत साहित्य का प्रचार से ओह रूप पर नियंत्रण होला। एकरा अतिरिक्त शिक्षा, शासन आ विभिन्न संस्था के भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
अपना ढंग से प्रयोग वैविध्य के रोके में महत्वपूर्ण भूमिका होला। भोजपुरी में अलिखित उन्नत साहित्य के अभाव त कबो ना रहल ह बाकिर लिखित उन्नत साहित्य के साथ ना त ओकर प्रयोग शिक्षा में होत रहल ह आ नाहीं कवनो एह तरह के रेखांकित होखे लायक संस्थागत प्रयास हीं होत रहल ह। अब भोजपुरी का संगे ई कुल्हि बा, बावजूद एकरा भोजपुरी में अशास्त्रीय शब्द निर्माण के स्थानीय भेद से असीमित क्षमता बा। ई भोजपुरी के एगो खास विशेषता भी ह। एह प्रसंग में एगो घटना के जिक्र कइल चाहऽतानी।

छपरा आ बलिया के यात्रा के प्रसंग में एक दिन ट्रेन अचानक सहतवार स्टेशन के आस-पास रुकि गइल। बहुत लोग देखे खातिर बाहर निकलि गइलन। थोड़ो देर बाद हमारा सीट के पड़ोसी वापस अइलन त हम उनसे पूछनी कि का भइल बा। तड़ से उहाँ का कहनी कि 'ट्रेनवा के 'भकभेलरिये' टूटि गइल बा'। हम पूछनी कि 'भकभेलरि' का? उहाँ का भकुआ के मुँह देखे लगनी आ तब तक दोसरका पड़ोसी बोललन—अरे 'भकधुरिया' के इहाँ का 'भकभेलरि' कहतानी। आ चट-पट सम्पूर्ण 'जेस्चर' का संगे व्याख्या के तौर पर एगो हथेली पर दूसरका बाँहि के आगे-पीछे रगड़ि के उहाँ का समझावल शुरू कइ दिहनी कि इहसहीं मोटका लोहा इंजनवा का निचवा हचर-हचर जवन करेला तवने···।' ई उदाहरण स्थानीय प्रयोग भेद के मात्र एगो नमूना रहल ह। बाकिर एकरा के शिष्ट प्रयोग ना मानल जा सकेला। हमरा दृष्टि में ई अपभाषा (slang) के उदाहरण ह। अपभाषा के शब्द भी भाषा के एगो अपेक्षित सदर्भ के पूरक होला। फिर भी भोजपुरी में कारक चिह्न सर्वनाम के कारकीय रूपन में एतना प्रयोग भेद के रूप वा जेवना में संकोच साहित्यकार लोगन के समकालीन लेखन से ही संभव हो सकेला।

नगपुरिया, सरवरिया, छपरहिया, काशिका आ चाहे गोरखपुरी आदि ई बोली भोजपुरी के चेतना के स्थानीय करवट हई स। एह रूपन से भोजपुरी के मानकता पर कवनो फर्क नइखे पड़े वाला, काहें कि कवनो भाषा के मानक प्रयोग के आकार पिरामिड जइसन होला। शीर्ष अपना संकोच में शंकुक आकार के होला आ क्रमशः आधार का ओर पर्याप्त विस्तारित होत जाला, जइसन त्रिभुज के आकार होला। शीर्ष आकार मानक प्रयोग के सूक्ष्मता के अंकन करेला, जेवना के छुए खातिर लेखक, साहित्यकार, सामाजिक अगुआ आ कवनो वक्त के मन चुपके-चुपके अनजानें में प्रयास करत रहेला। इहे प्रयास मानकता के प्रमुख आधार हवे जवन असंलक्ष्य गति से धीरे-धीरे चलेला आ भाषा भी धीरे-धीरे अपना कालिक गति में करवट बदलत रहेले जेवना के तुरत पता ना चलि पावेला। एगो मानकता स्थापित हो जाला, तले मील के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरका पत्थर के छुए के प्रयास शुरू हो जाला। उपर के कथित पिरामिड के विस्तारित आधार स्थानीय प्रयोग भेद के आधार ह, जवन अपना वैविध्य में नया प्रयोग खातिर कच्चा माल सप्लाई करेला। आजु के हिन्दी में आंचलिक प्रयोग के इहे असली रहस्य ह, जेवना के खूब प्रचार हो रहल बा।

आजु के भोजपुरी नेपाल के तराई से सुरगुजा ले आ इलाहाबाद से दरभंगा ले बन्हाइलि ना रहि के ऊ देश के हर बड़ शहरन के संगे विदेश के कई देशन में भी खूब शान से अंगड़ाई ले रहलि वा। आधुनिक संदर्भ में ओकरा साहित्य में बहुमुखी विस्तार आ विविधता जइसे विस्तारित हो रहल बा, ऊ शीघ्र कवनो समर्थ साहित्य के बरोबरी में खड़ा होखे लायक ओकरा के बनावे में समर्थ बा।

मानकता के प्रसंग में कवनो भाषा के मानकीकरण के सामान्य आधार चयन, प्रसार, प्रयोग आ अस्वीकृति के क्रम होला। ई कुल्हि मिलि के मानक भाषा के खाली एगो कार्य करेला जेवना के मुख्य कार्य कहल जा सकेला। ऊ कार्य बस एतने ह कि ओह भाषा के तथाकथित मानकीकरण ओकरा अधीनस्थ बोलियन के प्रयोग के वैविध्य का बावजूद उन्हन के एकसूतता में बंधले रहेला। एकरा खातिर मानकीकरण में निम्न बातन अवश्य ध्य न राखे के चाहीं। भोजपुरी के मानकीकरण खातिर भी एह बातन पर ध्यान के अपेक्षा कइल जा सकता—

(१) सबसे पहिले आधुनिक भोजपुरी के प्रवृत्ति विवेचन के आधार पर अभिनव व्याकरण के रचना कइल जाव।

(२) मानक भाषा के निर्धारण खातिर ओह भाषा के केन्द्रीय क्षेत्र के निर्धारण आवश्यक होला काहें कि अन्य क्षेत्र के लेखक भी केन्द्रीय क्षेत्र के प्रयोग के ऊँचाई छुए के प्रयास में एकरूपता स्थापित करके अनजाने में प्रयास करे लागेलन। एसे क्षेत्रीय वैविध्य संकुचित होला। एह से ई आवश्यक बा कि फेरु से केन्द्रीय क्षेत्र के स्पष्ट निर्धारण आ ओकर विधिवत प्रचार कइल जाव।

(३) मानक साहित्य के प्रमुख रचनाकारन द्वारा स्थानीय प्रयोग के प्रति (प्रयोग यदि बहुत आवश्यक या प्रासगिक या साभिप्राय ना होखे त) मोहमुक्ति आ केन्द्रीय प्रयोग का प्रति रुझान होखे के चाहीं।

(४) आवश्यक भइला पर ही स्थानीय अपभाषा (slang) के शब्दन के प्रयोग के दूर होखे के चाहीं, काहें कि अपभाषा के शब्दन में स्थानीय आधार पर वैविध्य के मापे के कवनो मापदण्ड नइखे।

(५) ध्वनि निर्धारण में आधुनिक भोजपुरी के केन्द्रीय स्वरूप के अतिरिक्त ओकरा राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में विचार के बाद ही ध्वनि निर्धारण होखे के चाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६) उच्चारण, शब्द चयन, पद रचना, वाक्य रचना आ अर्थ के स्तर पर न्यूनतम विकल्प के आग्रह अपेक्षित बा।

(७, विभिन्न (देशी विदेशी) भाषा से आगत शब्दन के भरिसक मूल रूप में स्वीकार कइल जाव। कुछ के भोजपुरीकरण हो सकेला जइसे हिन्दी में भी कुछ तकनीकी शब्दन (कामेडी —कामद), ट्रेजडी – त्रासद, स्ट्रेटजिक— स्मातजिक) के हिन्दीकरण भइल बा।

(८) विशेष रूप सें हिन्दी के तत्सम-तद्भव शब्दन के प्रयोग के प्रति पर्याप्त उदारता बरतल जाव। ई दूनो का हित में बा।

(९) पद रचना, कारक चिह्न आ वर्तनी सम्बन्धी समस्या के निर्धारण व्यापक स्तर पर निर्धारित गोष्ठियन के माध्यम से सुविचारित निष्कर्ष के आधार पर कइल जाव।

(१०) चूँकि भोजपुरी के उच्चारण स्तर पर 'श' आ 'ष' ध्वनि के स्थान 'स' ध्वनि ले लेला, अइसना में इन्हन के प्रयोग के स्तर पर मतभेद स्वाभाविक बा एसे आपसी सहयोग से एके तय कइल जाव। आ नाहीं त तत्सम शब्द जवन संस्कृत-हिन्दी का माध्यम से आइल बाड़न उन्हन में यथावत प्रयोग कइल जाव।

(११ कवनो भाषा के सम्बन्ध में शुद्धता खातिर शुद्धता के आग्रह निरर्थक होला, काहें कि जीवित आ प्रयोगपरक भाषावन के धारा एक-दूसरा से मिलत रहेला आ ओह धारा में विभिन्न भाषा के शब्द अनजान जगह पर भी पहुँचि के प्रयोगपरकता के धारा में बहि जालन। दुनिया के कवनो भाषा के विश्लेषण कइके देखल जा सकता। एसे निजी शब्दन के आधार पर शुद्धता के आग्रह ना होखे के चाहीं।

(१२) कवनो भाषा के निजी पहचान, वाक्य संरचना आ वाक्य में क्रियापद के प्रयोग होला। ई सही रहे के चाहीं, बाकिर हर भाषा के आपन कई गो वैभाषिक रूप होला। ओकरा खातिर भड़कल उचित नइखे। उदाहरण का तौर पर हिन्दी में भी कई गो वैभाषिक/साहित्यक रूप (हिन्दुस्तानी, हिन्दवी दक्खिनी हिन्दी, उर्दू सिनेमाई रूप आ अंग्रेजीदाँ लोगन के विशेष प्रयोग के रूप) बा। दुनिया के हर भाषा में ई होला।

अन्त में, हम एतने कहल चाहतानी कि भोजपुरी के भविष्य उत्तम बा। साहित्यसेवी आ प्रयोगकर्ता लोग अनजाने में मानक रूप के निर्धारण में संलग्न हो गइल बाड़न। एकर पहिलका श्रेय आजु के भोजपुरी के लेखक लोगन के बा। ओह लोगन के कोटिशः धन्यवाद आ साधुवाद। साधारण जनता, जवन असली पाठक होलन, उनके सजगता भी सराहनीय बा।

□ हिन्दी विभाग, सतीशचन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बलिया (उ० प्र०)-२७७००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघुकथा

बतकही

—अंकुश्री

ढेर दिन प मोर आ कउआ के भेंट भइल रहे। कउआ से मोर पूछलस, "का हाल बा ? तू आजकल कँहवा रहत बाड़ ?"

"पेड़ पर !" कउआ कहलस, "ऊ सब त हमार पुरान जगह ह, भला एह में पूछे के कवन बात बा ?"

"हूँ-हूँ ! तू काहे ना कहब ? तू आबादी के लगे पेड़ पर बाड एहिसे अइंठ के बोलत बाड।" बोलते-बोलते मोर के मन उदास भ गइल, "हम त जंगल में रहे बाला जीव ठहरनी।"

"एह में कवन शक बा। बाकिर एह लेल तहरा फिकिर काहे घुस गइल बा ?" कउआ पूछलस त मोर के मन में थमल बात ओकरा चोंच पर आ गइल।

"हम जंगल में रहे वाला जीव, कुछ दिन बाद कहवाँ रहेब एही फिकिर में पड़ल बानी।"

"ओहो, अब बात समझनी।" कउआ कहलस, "बाकिर जंगल के सब जीव के तहरे ठीका बा का ? जब ले जंगल बा तब ले उहँवा रहऽ। जंगल खतम भइला के बाद बगइचा त बा नू··· ?"

"बगइचा में हम रह सकत बानी। बाकिर हमरा परिवार बगइचा में बढ़ नइखे सकत नू ! परिवार बढ़े खातिर जगल चाँही आउर उहो साँचो के जंगल।"

"साँचो के जगल ?" कउआ अचकचाइल, "झूठहूँ के जंगल होला का ?"

मोर मुस्कुराइल, "शहर में बाड़ऽ एही से हमार बात नइखे बुझात। जगल में आव त नू बुझाई कि शहर में रह के दूर से जेकरा के जंगल समझल-जाला ऊ बगइचा त ढेर कहाई, खेतो नइखे बाँचल।"

"तू त आज अजीब बात बतावत बाड़ऽ !" कउआ चोंच बा देलस, "हमनी के त जंगल के बारे में हो-हल्ला सुनत रहीला। अखबार, दूरदर्शन आ रेडियो देखे-सुने वालन के कहनाम बा कि जंगल बचावे-बसावे खातिर लोग आपन जी-जान लगा के एड़ी-चोटी के पसीना बहा रहल बा।"

"तू सुनत बाड़ऽ आ हम देखत बानी।" मोर कहलस, "अच्छा, ढ़ेर बतकही भइल। अब जात बानी, देखीं, आज केतना जंगल साफ भइल बा··· ।"

मोर के चल गइला पर कउओ उड़ गइल।

□ वन भवन, राँची-८३४००२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के हलचल

—डॉ॰ शम्भुशरण

महेन्दर मिसिर के एक सौ आठवीं जयन्ती

छपरहिया पूर्वी गीतन के मर्मी सिरजनहार आ पूर्वी गायन परम्परा के अप्रतिम आचार्य संगीत-गुरु महेन्दर मिसिर के एक सौ आठवीं जयन्ती जलालपुर बाजार सारन, बिहार) में मनावल गइल। एह अवसर पर प्रो॰ बच्चू पाण्डेय के अध्यक्षता में भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल।

शहीद भगत सिंह बलिदान दिवस

केसरिया (पूर्वी चम्पारन, बिहार) में २३ मार्च १९९४ के शहीद भगत सिंह बलिदान दिवस मनावल गइल आ एह अवसर पर साँझ सात बजे से आचार्य पाण्डेय कपिल का अध्यक्षता में अखिल भारतीय स्तर के भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल, जवना के संचालन डॉ॰ व्रजभूषण मिश्र कइले। एह कवि सम्मेलन के सयोजक युवा कवि रवीन्द्र कुमार 'रवि' रहले। कवि लोगन में प्रमुख रहले मूसे मुहम्मद जानी, प्रो॰ सुभद्रा वीरेन्द्र, कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र', रामजी सिंह मुखिया, विनय राय, कुमार विरल, सुरेन्द्र 'सुमन', जयकान्त 'जय' आदि। एही मंच से पं॰ गणेश चौबे के अभिनन्दन भइल। एह अवसर पर २४ मार्च के श्री व्रजकिशोर दूबे के गायन भइल। ई सम्पूर्ण आयोजन स्थानीय भोजपुरी विकास मच का तत्वावधान में भइल, आ एकर सूत्रधार रहले मंच के अध्यक्ष श्री देवनाथ सिंह।

'श्रीकृष्ण सुधा' के प्रकाशनोत्सव

स्व॰ श्री कृष्ण लाल गुप्त 'अन्वेषी' के काव्य पुस्तक 'श्री कृष्ण सुधा' के प्रकानोत्सव दिनांक २ अप्रैल १९९४ के मिर्जापुर के प्रेम भवन में सम्पन्न भइल। पुस्तक के प्रथम प्रदशन प्रसिद्ध संगीत साधिका सुश्री वागेश्वरी देवी जी कइलीं आ एह अवसर पर लगावल बुक स्टाल के बेचनिहार बनलीं नवगीतकार आ चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट श्री जवाहर लाल कौल आ प्रथम बेसहनिहार रहलीं वयोवृद्ध कवि मंगल मूर्ति मानव। एह अवसर पर लोको संगीत के सुन्दर आयोजन भइल, जवना का बारे में जनता के राय रहे कि अइसन कार्यक्रम लम्बा समय से ना भइल रहल हऽ। सम्पूर्ण कार्यक्रम के संचालन आनन्द सन्धिदूत कइलन आ साक्षी में उपस्थित रहलन— आचार्य अजय शेखर, डॉ॰ अर्जुनदास केसरी, डॉ॰ चन्द्रभूषण पाण्डेय, रमेशचन्द्र द्विवेदी, उर्मिला श्रीवास्तव, इन्द्रजीत सिंह ढंग का संगे सैकड़न गो मित्र, प्रशंसक आ शुभचिन्तक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगल पाण्डेय बलिदान दिवस

१८५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम के प्रथम शहीद सिपाही मंगल पाण्डेय के बलिदान दिवस रानीगंज (पश्चिम बंगाल) में ८ अप्रैल १९९४ के पश्चिम बंग भोजपुरी समाज का ओर से मनावल गइल। एह अवसर पर दिन में 'वर्तमान सन्दर्भ में क्रांति और क्रांतिकारी' विषय पर एगो संगोष्ठी आ साँझ के सात बजे से जन-जागरण कवि सम्मेलन भइल।

ओही दिने, ८ अप्रैल १९९४ के बलिया (उत्तर प्रदेश) में, शहीद मंगल पाण्डेय बलिदान दिवस भोजपुरी के वरिठ कवि प्रभुनाथ मिश्र का अध्यक्षता में मनावल गइल, जवना के उद्घाटन बलिया के पूर्व सांसद श्री जगन्नाथ चौधरी कइले। ओह अवसर प बलिया के कदम चौराहा पर अवस्थित शहीद मंगल पाण्डेय के मूर्ति के माल्यार्पण के कार्यक्रम बहुत सरधा से सम्पन्न भइल।

बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन : तिसरका अधिवेशन

बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तिसरका अधिवेशन बलिया शहर में ८ अप्रैल १९९४ के डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी का अध्यक्षता में भइल। आचार्य पाण्डेय कपिल जी एह अधिवेशन के मुख्य अतिथि रहीं। नया सत्र खातिर डॉ० अशोक द्विवेदी एह जिला सम्मेलन के महामंत्री चुनल गइले। एह अवसर पर 'भोजपुरी भाषा के मानकीकरण' विषय पर एगो संगोष्ठी भइल, जवना में सतीशचन्द्र कालेज, बलिया के हिन्दी प्राध्यापक डॉ० रघुवंश मणि पाठक के निबन्ध-पाठ भइल। एह अवसर पर साँझ खा आचार्य पाण्डेय कपिल जी का अध्यक्षता में भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल, जवना के संचालन श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी कइले। कवि सम्मेलन का बाद श्री कमलेश हरिपुरी भोजपुरी लोक गीतन के गायन प्रस्तुत कइले।

'भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छन्द' के लोकार्पण

डॉ० व्रजभूषण मिश्र के भोजपुरी में लिखल आ भारती प्रकाशन, पटना से प्रकाशित 'भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस छन्द' नामक किताब के लोकार्पण पटना में ३ अप्रैल १९९४ के, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र नाथ सिंह का हाथे भइल। अपना भाषण में कुलपति जी एह ग्रंथ-रचना के सराहना करत भोजपुरी में शास्त्रीय विषयन पर ग्रंथ लिखे के जरूरत पर बल देलीं आ वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय में भोजपुरी विषयक एगो समृद्ध पुस्तकालय विकसित करेके योजना में सहायता करे खातिर भोजपुरी के लेखक-प्रकाशक लोगन से अपील कइलीं। एह अवसर के विशेष वक्ता रहले आचार्य अम्बिकादत्त त्रिपाठी 'व्यास', श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ० शम्भुशरण, डॉ० विश्वरंजन, डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय', श्री सत्य-नारायण सिंह, श्री रामनगीना राय, श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी आदि। एह आयोजन के अध्यक्षता अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती जी कइलीं आ संचालन कइलीं आचार्य पाण्डेय कपिल जी। श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी धन्यवाद-ज्ञापन कइले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० भा० भोजपुरी परिषद् उत्तर प्रदेश के पहिलका अधिवेशन

अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, उत्तर प्रदेश के पहिलका वार्षिक अधिवेशन वाराणसी में पराड़कर स्मृति भवन में १७ अप्रैल १९९४ के डॉ० लक्ष्मी नारायण तिवारी का अध्यक्षता में भइल। समारोह के मुख्य अतिथि पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय आ विशिष्ट अतिथि सांसद श्री शंकर दयाल सिंह रहीं। चार सत्र में विभाजित एह आयोजन के पहिलका सत्र 'लोकभाषा आ हिन्दी भाषा,' विषयक विचार-गोष्टी के रहे जवना के अध्यक्षता डॉ० शुकदेव सिंह जी कइले। एकरा में पं० गणेश चौबे, डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० द्विजराम यादव, श्री पाण्डेय कपिल, श्री रासबिहारी पाण्डे आ डॉ० अशोक द्विवेदी विचार विमर्श में भाग लिहले। अपराह्न दू बजे से आयोजित दोसरका सत्र कवि सम्मेलन के रहे जेकर अध्यक्षता महाकवि चन्द्रशेखर मिश्र आ संचालन कविवर भोलानाथ गहमरी कइले। अध्यक्ष आ संचालक का अलावे, भाग लेवे वाला कवियन में प्रमुख रहले— कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र', पाण्डेय कपिल, मधुर नज्मी, डॉ० अशोक द्विवेदी, पी० चन्द्रविनोद जगदीश पंथी, आनन्द सन्धिदूत, मैनावती आ सरिता शिवम् आदि। तिसरका सत्र रहे खुलल अधिवेशन आ सम्मान समारोह के। एह अवसर पर परिषद् के महामंत्री श्रीमती डॉ० राजेश्वरी शाण्डिल्य आपन रिपोर्ट प्रस्तुत कइली। परिषद् के सविधान-संशोधन का अलावे एगारह गो प्रस्ताव डॉ० राम अधार सिंह प्रस्तुत कइले जे सर्वसम्मति से स्वीकृत भइल। संस्था के अध्यक्ष पं० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी संस्था के उद्देश्य पर प्रकाश डलले। डॉ० राजेश्वरी शाण्डिल्य के सम्पादन में प्रकाशित ग्रंथ 'राहुल परिक्रमा' आ 'उद्बोधन' नामक एगो आउर ग्रंथ के लोकार्पण कइल गइल। एह सत्र में भोजपुरी क्षेत्र के छब्बीस विद्वान, कलाकार, शूरवीर आ साहित्यकार लोगन के सम्मानित आ विविध उपाधियन से अलंकृत कइल गइल। भोजपुरी-भाषी ना होके भी भोजपुरी के समर्थन करेवाला विद्वान साहित्यकार डॉ० डोमन साहु 'समीर' के 'भोजपुरी-भारती' के उपाधि दिहल गइल। आचार्य बलदेव उपाध्याय, डॉ० शंकरदयाल सिंह, पद्मभूषण गिरिजा देवी, डॉ० राजेन्द्र मिश्र, प० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, वीर अब्दुल हमीद (मरणोपरांत) आदि दस विभूतियन के 'भोजपुरी भास्कर' उपाधि से आउर डॉ० कन्हैया सिंह, डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय', डॉ० जितराम पाठक, डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' डॉ० श्याम कुमारी श्रीवास्तव, श्रीमती मैनावती, श्री पाण्डेय कपिल, श्री रासबिहारी पाण्डेय वगैरह चउदह विद्वान साहित्यकार-कलाकार लोगन के 'भोजपुरी शिरोमणि' उपाधि से अलंकृत कइल गइल। डॉ० निर्भीक के एक हजार एक रुपया के सिद्धेश्वरी देवी भोजपुरी भूषण पुरस्कार दिहल गइल। कइगो महत्वपूर्ण भाषण एह सत्र के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकर्षक रहे। आखिरी सत्र आठ बजे रात से शुरू भइल, जे साढ़े दस बजे ले चलल। ई सत्र रहे संगीत-नृत्य के, आ सत्र के प्रमुख आकर्षण रहे बाबूनन्दन आ उनका पार्टी के धोबिया नृत्य, सोनभद्र जिला के मुसहर-नृत्य, लखनऊ के मंजुला दिवाकर के भोजपुरी गीत गायन आ उनका दल के नृत्यांगना के नृत्य। कार्यक्रम के अन्त डॉ० किशोरीशरण शर्मा के धन्यवाद-ज्ञापन से भइल।

कांटी भोजपुरी मंच के आयोजन

२४ अप्रैल के वीर कुंअर सिंह विजय दिवस के अवसर पर कांटी थर्मल स्टेशन (मुजफ्फरपुर, बिहार) स्थित भोजपुरी मंच के आयोजन में डॉ० ब्रजभूषण मिश्र के अभिनन्दन उहाँ के महाप्रबन्धक श्री मोदी का हाथे भइल, आ ओकरा बाद भोजपुरी कवि सम्मेलन आचार्य पाण्डेय कपिल का अध्यक्षता में भइल। भाग लेवेवाला कवियन में प्रमुख रहले श्री अश्विनी कुमार आंसू, प्रो० कुमार विरल, प्रो० सुभद्रा वीरेन्द्र, सुरेन्द्र सुमन आदि।

बाढ़ (पटना) में साहित्यकार के सम्मान

लेखक-कवि लोग अपना रचना से समाज के नया रोशनी देवे के काम करे, जवना से एगो स्वस्थ सामाजिक माहौल पैदा होखे। ई बात ९ मई १९९४ के बाढ़ (पटना) में नवचेतन साहित्य संस्कृति एवं समाज कल्याण परिषद् के तिसरका वार्षिकोत्सव के उदघाटन करत बिहार के उद्योग राज्यमंत्री श्री रामनाथ ठाकुर कहले। ई समारोह बाढ़ के जगन्नाथन उच्च विद्यालय का प्रांगण में भइल रहे। एह अवसर पर, परिषद् का ओर से चुनल हिन्दी, मगही, भोजपुरी आ उर्दू के एक-एक साहित्यकार के माला, प्रशस्ति पत्र, शील्ड, चादर आ द्रव्य से सम्मानित कइल गइल। ई सम्मान बिहार के राजभाषा मंत्री आ एह परिषद् के संरक्षक श्री विजय कृष्ण का हाथे दिहल गइल। एह साल, परिषद् से सम्मानित होखेवाला साहित्यकारन में, 'नवचेतन श्री' सम्मान हिन्दी के लेखक रॉबिन शॉ 'पुष्प' के, 'मगध मयूर' सम्मान मगही गीतकार जयराम सिंह के, 'भोजपुरी भास्कर' सम्मान भोजपुरी साहित्यकार पाण्डेय कपिल के, आ 'खुशरवे गजल' सम्मान उर्दू के शायर डॉ० आर० इशरी के दिहल गइल। एह अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में, एह सम्मानित साहित्यकार लोग का अलावे, भोलानाथ गहमरी, तंग इनायतपुरी, जौहर शफियाबादी, अनिल विभाकर, सुभद्रा वीरेन्द्र, शबीर बिहारी, सरिता शिवम्, गणेश तिवारी, देवनन्दन 'विकल', योगेश वगैरह पचीसन कवि लोग भाग लिहल। समारोह के अध्यक्षता पटना आकाशवाणी के केन्द्र-निदेशक श्री बांकेनन्दन प्रसाद सिन्हा कइले। वार्षिकोत्सव और सम्मान समारोह के संचालन प्रो० साधुशरण 'सुमन' आ कवि सम्मेलन के संचालन जनार्दन शास्त्री 'जनक' कइले।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

अपील

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन ओह सब भाई-बहिन लोग के आभारी वा जे उदारतापूर्वक साढ़े सात सौ रुपया के दान देके 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के सरक्षक (आजीवन ग्राहक) भइल वा आ पत्रिका के प्रकाशन नियमित बनवले राखे में निमित्त बन रहल वा।

रउआ जानते वानीं कि पत्रिका के हर अंक के खर्च पूरा करे खातिर दू दूगो पत्रिका-संरक्षक से मिलल धनराशि में, वार्षिक ग्राहक से मिलल कुछ आउर रकम जोड़े के पड़ेला। इहे सिलसिला चल रहल बा, आ अबहीं इहे सिलसिला चलावल सम्मेलन के मजबूरी बा।

एह से, भोजपुरी के नेही भाई-बहिन लोग से निहोरा बा कि साढ़े सात सौ रुपया दान भेज के पत्रिका के संरक्षक (आजीवन ग्राहक) हो जाए के कृपा करीं, जेमें पत्रिका के नियमित प्रकाशन में गतिरोध ना होखे पावे। साढ़े सात सौ रुपया के दाता के नाम संरक्षक-मण्डल में शामिल कर लिहल जाई, जे पत्रिका के हर अंक पर छपत रही।

जे वार्षिक ग्राहक के शुल्क सध गइल वा ओकरा से आगे खातिर शुल्क भेजे के अनुरोध बा। जे अबले वार्षिक ग्राहक नइखे भइल आ जे पत्रिका-संरक्षक नइखे बन सकत ऊ कम-से-कम वार्षिक ग्राहक त जरूर बन जाय, इहो अरज बा।

नगेन्द्र प्रसाद सिंह
महामंत्री

दण्डस्वामी विमलानन्द सरस्वती
अध्यक्ष

भोजपुरी रचनाकारों से

सम्मान्य बन्धुओ !

'समकालीन हिन्दी गजल' गिरनार प्रकाशन, पिलाजीगंज, मेहसाना, उ० गुजरात के प्रकाशनोपरान्त 'समकालीन भोजपुरी गजल' संज्ञक पुस्तक के प्रकाशन की योजना प्रगतिपथी है। आपकी तीन भोजपुरी गजलें, निम्नस्थ पते पर सादर प्रार्थित-प्रतीक्षित हैं।

निवेदक

मधुर नज्मी

काव्यायनम्, हफीज कॉलोनी, आदर्शनगर, मुहम्मदाबाद गोहना, मऊ-२७६४०३, (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५ रु० शुल्क देके साल-भर खातिर/१५१ रु० शुल्क देके जिनिगी-भर खातिर

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के सदस्य बनीं

आ

३५ रु० शुल्क देके/सम्मेलन के सदस्य बानीं त सिर्फ २५ रु० रियायती शुल्क देके

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

के सालाना ग्राहक बनीं।

महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-२४

सेवा में :—

दा-83. श्री प्रमोद कुमार राय
राजगुरु मठ
बी-3/175, शिवाला घाट
वाराणसी

प्रेषक :—
'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'
अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से, पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४ (दूरभाष । २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय कपिल द्वारा कमी प्रेस प्रा० लि०, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २६१०५३, २३२७८०) में मुद्रित।

सम्पादक : पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.